जैनाचार्य मानतुंग द्वारा रचित

# भक्तामर स्तोत्र

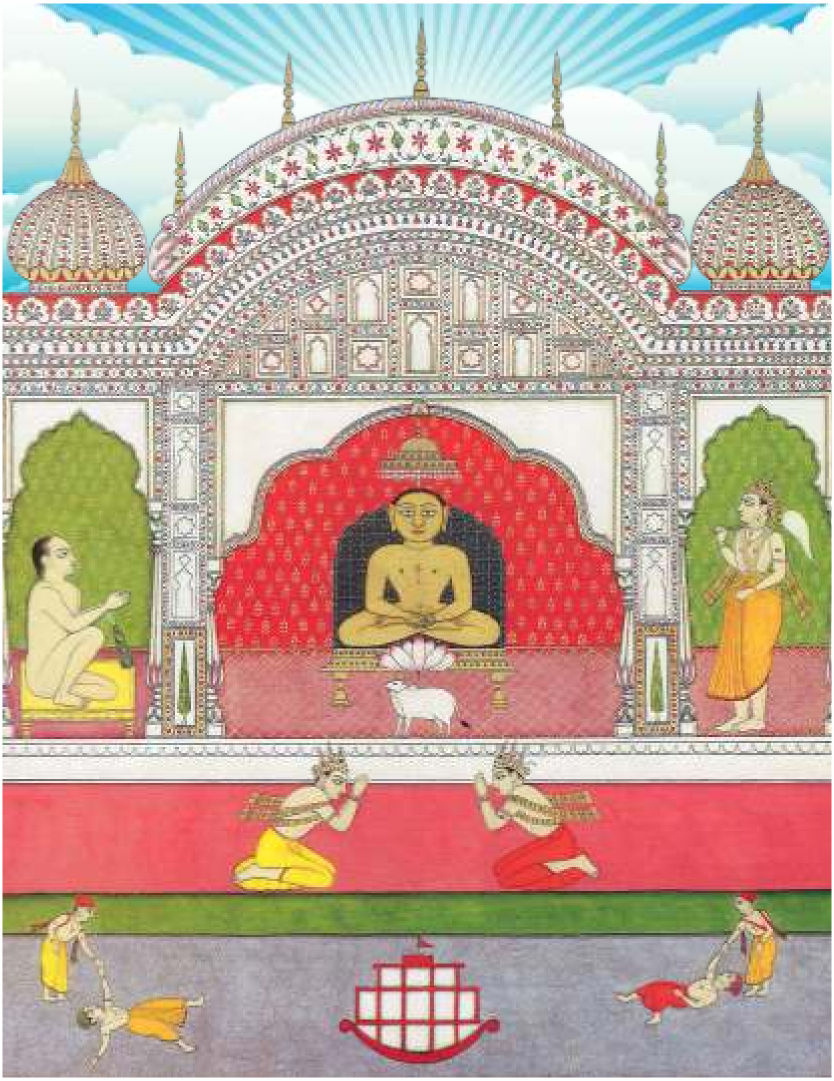

भावानुवाद

श्रमणाचार्य श्री 108 विभवसागर जी महाराज

सम्पादन

आर्यिका अर्हं श्री माताजी

जैनाचार्य मानतुंग द्वारा रचित

# भक्तामर स्तोत्र

भावानुवाद

श्रमणाचार्य श्री 108 विभवसागर जी महाराज

सम्पादन

आर्यिका अर्हं श्री माताजी

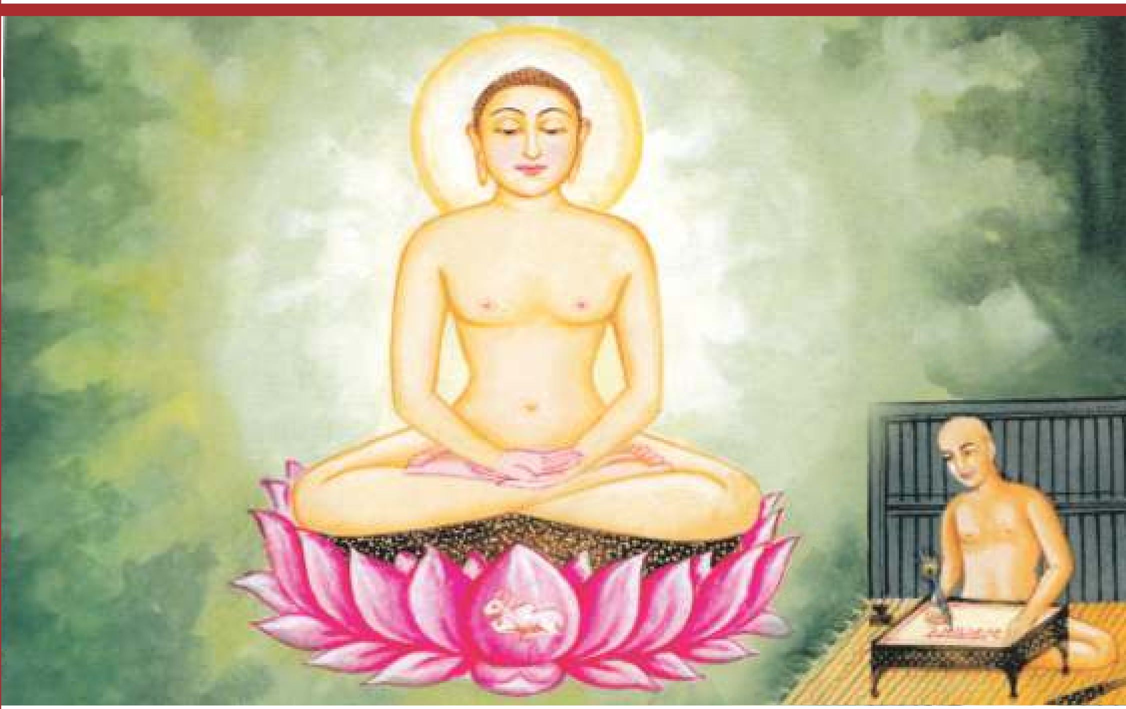


| | | |
|---|---|---|
| मूल | : | भक्तामर स्तोत्र |
| रचयिता | : | दिगम्बराचार्य मानतुंग स्वामी |
| शुभाशीष | : | प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज<br>सारस्वत कवि, शास्त्रकवि |
| भावानुवाद | : | श्रमणाचार्य विभवसागर जी महाराज |
| चित्रांकन | : | आचार्य श्रुतसागर मुनिराज |
| संकलन/सम्पादन | : | आर्यिका अर्हं श्री माताजी |
| संस्करण | : | प्रथम – 1000 प्रतियाँ, द्वितीय 1000 प्रतियाँ |
| प्रसंग | : | बाहुबली महामस्तकाभिषेक–2018 |
| पुण्यार्जक | : | पुण्यार्जक परिवार |
| प्राप्ति स्थल | : | 1. सौरभ जैन, संस्थापक अध्यक्ष (श्रमण श्रुत सेवा संस्थान)<br>पर्सनलिटी डेवलपमेंट गुरु व मोटिवेशनल स्पीकर, वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर<br>66–ए, अर्जुन नगर, साउथ जयपुर – 302015<br>2. सन्मति जैन, जैन चश्मा घर, परकोटा, सागर (म.प्र.) मो.:<br>3. पुण्यार्जक परिवार |
| मुद्रक | : | विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स<br>45, सेक्टर–एफ, औद्योगिक क्षेत्र, गोविन्दपुरा, भोपाल (म.प्र.)<br>फोन : 0755–2601952, 9425005624 |

# आचार्य परम्परा

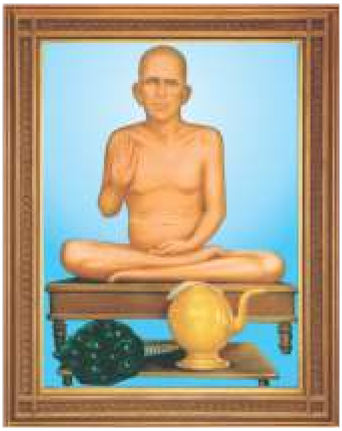

प.पू. 108 आचार्य श्री आदिसागरजी महाराज (अंकलीकर)

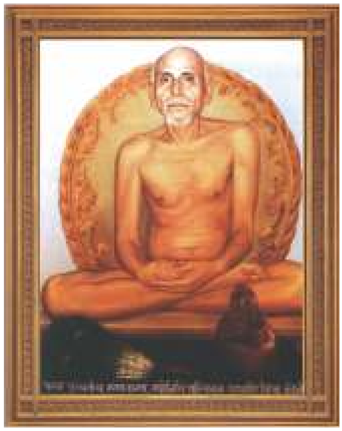

प.पू. 108 आचार्यश्री महावीर कीर्तिजी महाराज

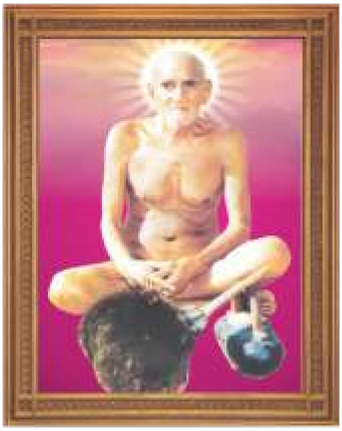

प.पू. 108 आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज

प.पू. 108 आचार्यश्री सन्मतिसागरजी महाराज

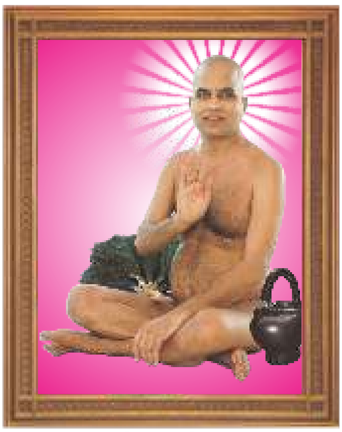

परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज

प.पू. श्रमणाचार्य श्री 108 विभवसागरजी महाराज

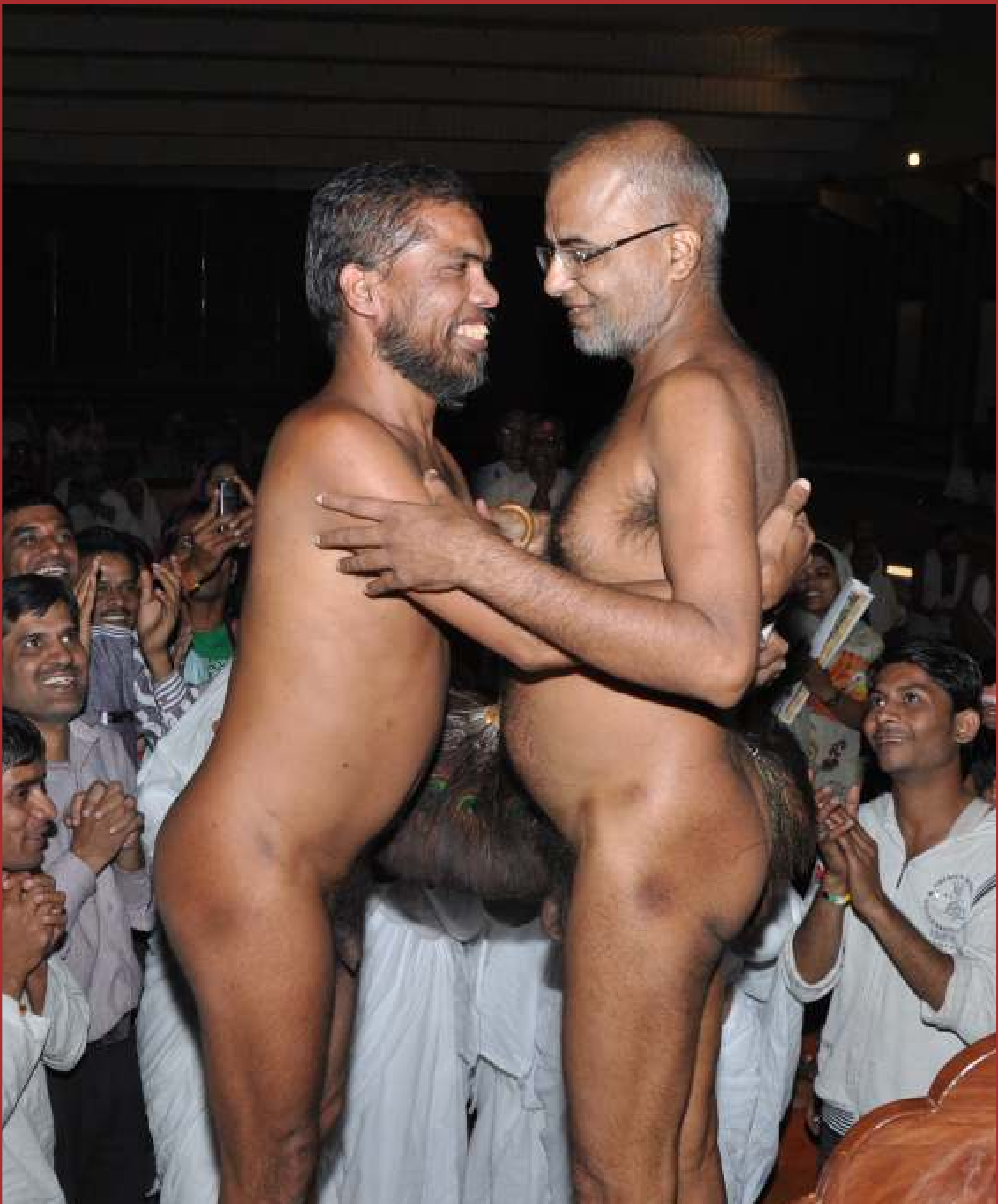

# गुरु शिष्य मिलन

प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज एवं प.पू. श्रमणाचार्य श्री 108 विभवसागर जी महाराज

भट्टारक नसिया, जयपुर, 2012

# आचार्य विभवसागर जी महाराज के संघस्थ दीक्षित-साधुगण

| क्र. | साधुगण | दीक्षा तिथि |
|---|---|---|
| | **श्रमण विभास्वरसागर जी महाराज** | **गुरु-आचार्य विरागसागर जी** |
| 1. | श्रमण आचरणसागर जी महाराज | 10.02.2011, हटा (म.प्र.) |
| 2. | श्रमण अध्ययनसागर जी महाराज | 04.12.2014, सागर (म.प्र.) |
| 3. | श्रमण आवश्यकसागर जी महाराज | 04.12.2014, सागर (म.प्र.) |
| 4. | श्रमण अध्यापनसागर जी महाराज | 04.12.2014, सागर (म.प्र.) |
| 5. | श्रमण अर्हंतसागर जी महाराज | 04.12.2014, सागर (म.प्र.) |
| 6. | श्रमण आचारसागर जी महाराज | 04.12.2014, सागर (म.प्र.) |
| 7. | श्रमण शुद्धात्मसागर जी महाराज | 16.02.2018, श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) |
| 8. | श्रमण सिद्धात्मसागर जी महाराज | 16.02.2018, श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) |
| 9. | श्रमण समाधिसागर जी महाराज | 07.07.2018, मुम्बई (महा.) |
| 10. | श्रमणी अर्हंश्री माताजी | 14.04.2016, शिखरजी (झारखण्ड) |
| 11. | श्रमणी ओम् श्री माताजी | 14.04.2016, शिखरजी (झारखण्ड) |
| 12. | श्रमणी समिति श्री माताजी | 16.02.2018, श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) |
| 13. | श्रमणी संस्कृत श्री माताजी | 16.02.2018, श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) |
| 14. | श्रमणी संस्कृति श्री माताजी | 16.02.2018, श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) |
| 15. | श्रमणी ह्रीं श्री माताजी | 18.11.2015, भिलाई (छ.ग.) |
| 16. | क्षुल्लिका आराधना श्री माताजी | 17.01.2016, राजिम (छ.ग.) |
| 17. | क्षुल्लिका सिद्धश्री माताजी | 16.11.2016, जैतहरी (म.प्र.) |
| 18. | क्षुल्लिका संस्तुति श्री माताजी | 16.02.2018, श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) |

| क्र. | समाधिस्थ साधुगण | समाधि तिथि |
|---|---|---|
| 1. | श्रमण अध्यात्म सागर जी | 2015, दुर्ग (छ.ग.) |
| 2. | श्रमण अनशन सागर जी | 2017, शिरड, शहापुर (महा.) |
| 3. | श्रमणी विनिर्मला श्री माताजी | 2007, नागपुर (महा.) |
| 4. | श्रमणी प्राज्ञा श्री माताजी | 2018, बगरोही (म.प्र.) |
| 5. | क्षुल्लिका विदेह श्री माताजी | 2001, कोतमा (म.प्र.) |
| 6. | क्षुल्लिका अनुकम्पा श्री माताजी | 2011, सागर (म.प्र.) |
| 7. | क्षुल्लिका अर्हद् श्री माताजी | 2014, सागर (म.प्र.) |

# अनुक्रमणिका


1. तीर्थंकर आदिनाथ
2. भक्तामर कैसे, कहाँ और क्यों रचाया गया?
3. भक्तामर शुद्ध पढ़ने के लिए आवश्यक जानकारी – उच्चारणाचार्य विनम्रसागर
4. आचार्य मानतुंग – डॉ. नेमीचन्द्र शास्त्री ज्योतिषाचार्य
5. वैज्ञानिक अनुसन्धान एवं सफल प्रयोग – आर्यिका अर्हं श्रीमाताजी
6. प्रस्तावना – श्रमणाचार्य विभवसागर
7. भक्तामर स्तोत्र अनुभूत चमत्कार – श्रमणाचार्य विभवसागर

| | शीर्षक | फल | पृ.क्र. |
|---|---|---|---|
| 1. | जिनचरण वन्दन | सर्व विघ्न विनाशक | 1 |
| 2. | स्तुति का संकल्प | सर्व विघ्न विनाशक | 3 |
| 3. | लघुता की अभिव्यक्ति | सर्व सिद्धि दायक | 5 |
| 4. | जिनदेव के अवर्णनीय गुण | जल–जन्तु भय मोचक | 7 |
| 5. | भक्ति की प्रेरणा | नेत्र रोग संहारक | 9 |
| 6. | स्तुति में भक्ति ही कारण | सरस्वती विद्या प्रसारक | 11 |
| 7. | पापविनाशक जिनवर स्तुति | सर्व क्षुद्रोपद्रव निवारक | 13 |
| 8. | जिनवर की प्रभुता का प्रभाव | सर्वारिष्ट योग निवारक | 15 |
| 9. | प्रभु नाम ही पापनाशक | अभीप्सित फलदायक | 17 |
| 10. | समपद दायक भक्ति | उन्मत्त कूकर विष निवारक | 19 |
| 11. | निर्निमेष दर्शनीय स्वरूप | आकर्षण बढ़ाने वाला | 21 |
| 12. | अद्वितीय अनुपम सौन्दर्य | वांछित रूप प्रदायक | 23 |
| 13. | चन्द्रातिशायी जिनमुख | लक्ष्मी सुख दायक | 25 |
| 14. | त्रिभुवनव्यापी गुणकोष | आधि–व्याधि नाशक | 27 |
| 15. | मेरु सम अविचल ध्यान | सम्मान सौभाग्य संवर्द्धक | 29 |
| 16. | अद्वितीय दीपक | सर्व विजय दायक | 31 |
| 17. | सूर्यातिशायी जिनसूर्य | सर्व रोग निरोधक | 33 |
| 18. | अद्भुत मुखचन्द्र | शत्रु सैन्य स्तंभक | 35 |
| 19. | अन्धकारनाशक जिनमुख | उच्चाटनादि रोधक | 37 |
| 20. | आप जैसा ज्ञान अन्य देवों में कहाँ | संतान संपत्ति सौभाग्य प्रदायक | 39 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 21. | अन्त में पाया सो ठीक है | सर्व सौभाग्य प्रदायक | 41 |
| 22. | आपकी माता धन्य है | भूत पिशाचा बाधा निरोधक | 43 |
| 23. | मृत्युंजयी श्रेयसपथ जिनदेव ही | शिरोरोग नाशक | 45 |
| 24. | विभिन्न नाम आपके ही | बुद्धि-बुद्धि प्रदायक | 47 |
| 25. | ब्रह्मा, विष्णु, शंकर और बुद्ध आप ही | दृष्टि दोष निरोधक | 49 |
| 26. | आपको नमस्कार हो | अर्द्ध शिर पीड़ा विनाशक | 51 |
| 27. | दोष रहित गुणों के स्वामी | शत्रु उन्मूलक | 53 |
| 28. | अशोक वृक्ष प्रातिहार्य | सर्व मनोरथ पूरक | 55 |
| 29. | सिंहासन प्रातिहार्य | नेत्र पीड़ा विनाशक | 57 |
| 30. | चँवर प्रातिहार्य | शत्रु स्तंभक | 59 |
| 31. | छत्रत्रय प्रातिहार्य | राज्य सम्मान दायक | 61 |
| 32. | देव-दुन्दुभि प्रातिहार्य | ग्रहण संहारक | 63 |
| 33. | पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य | सर्व ज्वर संहारक | 65 |
| 34. | भामण्डल प्रातिहार्य | गर्भ संरक्षक | 67 |
| 35. | दिव्यध्वनि प्रातिहार्य | ईति-भीति निवारक | 69 |
| 36. | विहार में स्वर्ण कमलों की रचना | लक्ष्मी प्रदायक | 71 |
| 37. | आप जैसी विभूति अन्यों में नहीं | दुष्टता प्रतिरोधक | 73 |
| 38. | हस्तिमय निवारक भक्ति | हस्तिमदभंजक | 75 |
| 39. | सिंहमय-मुक्त जिनेन्द्र-भक्त | सिंह शक्ति संहारक | 77 |
| 40. | नाम स्मरण से दावाग्नि | सर्वाग्निशामक | 79 |
| 41. | भुजंग भयहारी नाम नागदमनी | भुजंग भय भंजक | 81 |
| 42. | संग्राममय विनाशक जिनकीर्तन | युद्ध भय विनाशक | 83 |
| 43. | शरणागत की युद्ध में विजय | सर्व शांति दायक | 85 |
| 44. | नाम स्मरण से निर्विघ्न समुद्र यात्रा | सर्वापत्ति विनाशक | 87 |
| 45. | व्याधि विनाशक चरण रज | जलोदरादि विनाशक | 89 |
| 46. | नाम जप से बन्धन मुक्ति | बंधन विमोचक | 91 |
| 47. | सर्व-भय निवारक जिन-स्तवन | अस्त्र शस्त्रादि निराधक | 93 |
| 48. | स्तुति का फल | मोक्ष लक्ष्मी प्रदायक | 95 |

| | | |
|---|---|---|
| 8. | ऋद्धि मंत्र | 97 |
| 9. | गणधर वलय स्तोत्र | 98 |
| 10. | भक्तामर महिमा | 100 |
| 11. | भक्तामर आरती | 101 |

# तीर्थंकर आदिनाथ

पूर्व के 11 वें भव में आप जय वर्मा थे 10 वें भव में राजा 'महाबल' हुए तब किसी मुनि ने बताया कि अगले दशवें भव में आप भरतक्षेत्र में प्रथम तीर्थंकर होंगे। पूर्व के नवे भव में ललितांग देव हुए, आठवें भव में वज्रजंघ, सातवें भव में भोगभूमिज आर्य, छठें भव में श्रीधर नाम देव, पांचवे भव में सुविधि, चौथे भव में अच्युतेन्द्र, तीसरे भव में वज्रनाभि और पूर्व के दूसरे अर्थात् तीर्थंकर से पूर्व वाले भव में 'सर्वार्थसिद्धि' में अहमिन्द्र हुए, वर्तमान भव में इस चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर हुए। आप अन्तिम कुलकर नाभिराय के पुत्र थे। आपकी नन्दा और सुनन्दा नाम की दो रानियाँ थी। आपके भरत और बाहुबली आदि सौ पुत्र तथा ब्राह्मी और सुन्दरी नाम की दो पुत्रियाँ थी। उस समय आपने प्रजा को असि, मषि, कृषि, वाणिज्य, विद्या और शिल्प यह छह कर्म सिखाये तथा क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र. इन वर्णों की स्थापना की। आषाढ़ कृ. 1 को कृतयुग का आरम्भ होने पर आप प्रजापति की उपाधि से विभूषित हुए। राज्य सभा में नृत्य करते–करते नीलांजना नाम की अप्सरा का मरण हो जाने पर आपको संसार से वैराग्य हो गया। आपने दैगम्बरी दीक्षा धारण कर ली, 6 माह तक लगातार आप योग में रहे और फिर 7 माह 8 दिन तक आहार का लाभ नहीं हुआ। इस तरह 13 माह 8 (दिन चैत्र वदी नवमी से वैशाख सुदी दोज तक) आप निराहारी रहे। उसके पश्चात राजा श्रेयांस के यहाँ वैशाख शुक्ल तृतीया को प्रथम पारणा हुई। जिसके कारण यह तिथि अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हो गई। इस प्रकार एक हजार वर्ष तक आप तप करते रहे, और केवलज्ञान प्राप्त कर समवशरण में भव्य जीवों को उपदेश देते हुए धर्म तीर्थ का प्रवर्तन किया तथा अन्त में अष्टापद कैलाश पर्वत से मोक्ष प्राप्त किया।

# भक्तामर कैसे, कहाँ और क्यों रचाया गया?

मालवा प्रान्त के उज्जैन में धार नगरी के राजा भोज विद्याप्रेमी गुणग्राही संस्कृत के विद्वान् हुए उनके राज्य में विप्र कालिदास मंत्री थे जो विद्या में प्रवीण थे। पं. कालिदास ने कालीदेवी को सिद्ध कर लिया था तथा वचन सिद्धि भी प्राप्त कर ली थी।

एक दिन सेठ सुदंत अपने पुत्र मनोहर को लेकर राजा की सभा में गया। राजा ने पुत्र मनोहर, होनहार बालक को देखकर उसकी पढ़ाई के बारे में पूछा तो सुदंत ने बताया अभी वह महाकवि धनंजय द्वारा रची गई नाममाला पढ़ रहा है। राजा ने नाममाला का नाम पहली बार सुना तो चकित होते हुए कहा हमें भी उस धनंजय से मिलवाइये। विप्र कालिदास मंत्री थे पर उनसे धनंजय की प्रशंसा सुनी न गई और ईर्ष्या का साँप उनके तन पर लोट गया और बोले राजन्! संस्कृत विद्या सिर्फ हम ब्राह्मणों के पास है इन जैनियों के पास ये विद्या नहीं है हम ही लोग इन्हें पढ़ाते हैं। नाममाला धनंजय ने नहीं बनाई इसका मूल नाम 'नाम मंजरी' है, उसे हमने लिखा है।

एक दिन राजा ने कवि धनंजय को राजदरबार में बुलाया तो कालिदास और धनंजय की बहुत बहस हुई; धनंजय ने कहा यदि तुमने नाममाला लिखी है तो बताइये इसमें क्या लिखा है? इस पर कालिदास चुप रह गये तभी धनंजय ने पूरी नाममाला सुना दी। राजा खुश हुआ और कालिदास ईर्ष्या से भरकर बोले इसके गुरु को कुछ नहीं आता तो इसे क्या आता होगा? धनंजय ने जैसे ही गुरु मानतुंगाचार्य के बारे में अपमानित शब्द सुने तो आग बबूला हो गया वह तुरंत लाल आँख करते हुए बोला यदि आप विद्वत्ता रखते हैं तो हमारे गुरु से बाद में, पहले हमसे शास्त्रार्थ करके देख लो और शास्त्रार्थ हुआ जिसमें कालिदास पराजित हुए तो कालिदास ने आ. मानतुंग से ही शास्त्रार्थ करने के लिए कहा।

प्रातःकाल आ. मानतुंग जी के पास राजाज्ञानुसार कुछ श्रेष्ठीगण निवेदन करने गये तो आचार्य श्री ने कहा– हम श्रावकों के घर दो काम से जा सकते हैं एक आहार करने दूसरा किसी की समाधि कराने, शेष समय में श्रावक ही दर्शनार्थ आते हैं अतः हम जिनागम का उल्लंघन नहीं कर सकते इस पर कुछ लोग बोले महाराज, राजा दण्ड भी दे सकता है, आ. श्री बोले हमें दण्ड उपसर्ग सभी स्वीकार हैं लेकिन जिनाज्ञा का उल्लंघन नहीं।

राजसभा में यह सुनकर कालिदास, राजाभोज से बोले–देखा, ज्ञान हीं नहीं है अन्यथा आये क्यों नहीं। ढोंगी साधु ऐसे ही होते हैं ये माया का जाल फैलाकर भोली भाली अज्ञानी समाज को ठगते हैं। इस पर राजा ने कुपित होकर आ. मानतुंग जी को जबरदस्ती लाने को कहा जब लोग जबरन लाने लगे तो आचार्य श्री ने उपसर्ग जानकर मौनधारण कर लिया। राजा भोज के द्वारा बहुत प्रार्थना करने

पर भी जब आचार्य श्री कुछ न बोले तो कालिदास ने कहा ये महामूर्ख, भयभीत हैं इन्हें कर्नाटक से देश निकाला दिया था इसलिये ये यहाँ पर रह रहे थे। राजा ऐसे वचन सुनकर क्रोधित हो उठा और आ. श्री को हथकड़ी और बेड़ियों से बाँधकर अड़तालीस कोठों के भीतर कालकोठरी में बंद करवा दिया और मजबूत ताले लगवाकर पहरेदारों को बिठा दिया। तीन दिन तक बंदीगृह में निराहार होते हुए भी समता धारण करते हुए अडिग–अकंप थे चौथे दिन उनके मुख से आदिनाथ भगवान् की स्तुति मुखरित हो गई। जैसे–जैसे स्तुति छंदों में आगे बढ़ती गई उधर लगे हुए ताले स्वयमेव टूटते गये। इसी स्तोत्र का नाम भक्तामर स्तोत्र या आदिनाथ स्तोत्र पड़ गया। ताले खुलते ही मुनिराज बाहर आ गये, बाहर पहरेदार देखकर घबरा गये उन्हें पकड़कर बंद कर दिया, थोड़ी देर बाद फिर ऐसा ही हुआ, पहरेदारों ने फिर बंद कर दिया। तीसरी बार फिर वैसा ही हुआ तो पहरेदारों ने राजा भोज को यह बात खुली आँखों से देखने को कहा। राजा ने जब ऐसा देखा तो राजा का हृदय तक काँप गया और अपने आप को मृत जैसा महसूस करने लगे। राजा की यह दशा देख कालिदास ने राजा को धैर्य बँधाया और स्वयं कालिका स्तोत्र पढ़ने लगा तभी सभा में काली देवी चण्डी का विकृत रूप लिए प्रकट हुई; मुनिराज शांत स्वभाव में बैठे थे तत्काल उनके पास चक्रेश्वरी देवी प्रकट हो गई। चक्रेश्वरी को देखते ही काली देवी काँप उठी क्योंकि सम्यग्दृष्टि देवी में मिथ्यादृष्टि देवी से हजारों गुनी ताकत होती है। चक्रेश्वरी की एक ललकार के सामने काली चण्डी मुनिराज के पैरों को पड़कर गिड़गिड़ाने लगी, क्षमा माँगने लगी। मुनिराज ने क्षमा कर दिया तथा वह मुनिराज की स्तुति करके अदृश्य हो गई।

मानतुंग महाराज की तपस्या और उनका प्रताप देखकर राजाभोज और कालिदास ने पश्चाताप की ज्वाला में जलते हुए आत्मालोचना व आत्मनिंदा करते हुए सबके सामने क्षमा माँगी व श्रावक के व्रत धारण करके खूब धर्म का प्रचार–प्रसार किया और भक्तामर की महिमा को जन–जन तक पहुँचाकर उसे अजर–अमर बना दिया। आ. मानतुंग जी श्वेताम्बर संत थे यथार्थता जानकर के स्वयं दिगम्बर संत हुए आपके गुरु अजितसेन जी ने भक्तामर धार नगरी में राजा भोज के समय में पंचमकाल की सातवीं शताब्दी में कैदखाने में रचाया गया लेकिन कैद से मुक्त कराने वाला है। सभी संत प्रात: उठकर स्तुति करते हैं इसलिये वह स्तुति ही भक्तामर स्तोत्र बन गया। संस्कृत के ज्ञाता होने के कारण यह संस्कृत में रचाया गया सभी स्तोत्रों में यह भक्तामर सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। और यह सब कार्य सिद्ध कराने वाला, सर्व विघ्नविनाशक–ऋद्धि सिद्धि और बुद्धि को प्रखर करने वाला स्तोत्र है।

❑❑

# भक्तामर शुद्ध पढ़ने के लिए आवश्यक जानकारी

1. भक्तामर स्तोत्र संस्कृत के वसंत तिलका छंद में लिखा गया है इसका लक्षण ''तभजा जगौग:'' है। इस छंद के मधु माधवी, सिंहोन्मत्ता व उद्धर्षिणी नाम भी हैं। इस छंद में 4 पंक्ति होती हैं एक पंक्ति में 14 अक्षर व 21 मात्रायें होती हैं प्रत्येक पंक्ति के 14 अक्षरों से 7 ह्रस्व और 7 दीर्घ होते हैं। एक काव्य में 56 अक्षर और 84 मात्रायें होती हैं 48 काव्यों में 2688 अक्षर और 4032 मात्रायें होती हैं। इसकी रचना लगभग सातवीं शताब्दी में हुई।

## छंद में मात्राओं की रचना – (ह्रस्व = | , दीर्घ = S)

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्राएँ | S | S | \| | S | \| | \| | \| | S | \| | \| | S | \| | S | S | = | 21 |
| 14 अक्षर– | भक् | ता | म | र | प्र | ण | त | मौ | लि | म | णि | प्र | भा | णा | | |
| | S | S | \| | S | \| | \| | \| | S | \| | \| | S | \| | S | S | = | 21 |
| 14 अक्षर– | मुद् | यो | त | कं | द | लि | त | पा | प | त | मो | वि | ता | नम् | | |
| | S | S | \| | S | \| | \| | \| | S | \| | \| | S | \| | S | S | = | 21 |
| 14 अक्षर– | सम् | यक् | प्र | णम् | य | जि | न | पा | द | यु | गं | यु | गा | दा | | |
| | S | S | \| | S | \| | \| | \| | S | \| | \| | S | \| | S | S | = | 21 |
| 14 अक्षर– | बा | लम् | ब | नं | भ | व | ज | ले | प | त | तां | ज | ना | नाम् ।। | | |

- जो अक्षर वर्णमाला में नहीं है और दो व्यंजन और एक स्वर से मिलकर बनते हैं वे संयुक्त अक्षर कहलाते हैं जैसे क्ष, त्र, ज्ञ, क्र, प्र, म्र, भ्र, म्य, क्य आदि।
- स्वराघात विधि–संयुक्त अक्षर के पूर्व यदि ह्रस्व स्वर (अ, इ, उ, ऋ, लृ) आ जावे तो संयुक्त अक्षर के पूर्व स्वर पर जोरे दते हुए संयुक्त अक्षर को दो बार उच्चारण जैसा बोलते हैं यही स्वराघात है। दीर्घ स्वर, अनुस्वार व विसर्ग आने पर स्वराघात नहीं होता है।
- ए ऐ ओ औ, ये दीर्घ हैं लेकिन संध्यक्षर हैं। ये दो स्वरों से मिलकर बने हैं अ+इ=ए, अ+ए=ऐ, अ+उ=ओ, अ+ओ=औ। इन सभी में दो स्वर हैं इसलिए ये हमेशा दीर्घ होते हैं।
- वर्णमाला में 14 स्वर और 33 व्यंजन होते हैं। 14 स्वर में 5 ह्रस्व और 9 दीर्घ होते हैं 33 व्यंजन में 20 घोष होते हैं और (कख, चछ, तथ, टठ, पफ, श, ष, स) ये तेरह अघोष होते हैं जो अक्षर मुँह से बाहर आते हैं वे स्वर सहित व जो मुँह के अन्दर ध्वनित होते हैं उन्हें हलन्त अक्षर कहते हैं।

- ए और ओ के बाद कहीं–कहीं (ऽ) चिह्न लगा होता है इसका मतलब 'अ' है किसी भी अक्षर के ऊपर अनुस्वार लगा हो तो उसे ङ् ञ् ण् न् म् इनमें से कोई एक अक्षर में उच्चारित करते हैं।

  पाँच वर्ग होते हैं – कण्ठोच्चारित – क वर्ग – क ख ग घ ङ

  मूर्धोच्चारित – ट वर्ग – ट ठ ड ढ ण

  ओष्ठोच्चारित – प वर्ग – प फ ब भ म

  ताल्वोच्चारित – च वर्ग – च छ ज झ ञ

  दन्त्युच्चारित – त वर्ग – त थ द ध न

  अन्योच्चारित – य र ल व श ष ह संयुक्त अक्षर क्ष त्र ज्ञ
- किसी भी शब्द में अनुस्वार के बाद जिस वर्ग का अक्षर आता है तो अनुस्वार, उसी वर्ग का अंतिम अक्षर हो जाता है। जैसे – गंगा, इसमें अनुस्वार को ङ् बोलेंगे यदि झंडा हो तो झण्डा, पंथ–पन्थ, पंप–पम्प, गंजा–गञ्जा आदि।
- गंगा में अनुस्वार के बाद गा है और गा क वर्ग का है इसलिये अनुस्वार ङ् होगा, झंडा में डा है ड ट वर्ग का है ट वर्ग का अन्तिम अक्षर ण है अतः ण् होगा आदि।
- शब्द के अन्तिम अक्षर पर अनुस्वर हो तो म् पढ़ा जाता है जैसे ज्ञानं, ध्यानं, मानं।
- स से पूर्व अनुस्वार को न्, श, य के पूर्व ञ्, ह के पूर्व ङ् और ष के पूर्व ण् पढ़ते हैं।
- श ष स तीनों का उच्चारण अलग–अलग है जब जीभ मूर्धा से घिसटते हुए ड की तरह आती है तब ष होता है, जब जीभ की नोंक ऊपर दाँत की जड़ के ऊपर लगती है तब श होता है और जब जीभ के ऊपर के दाँत के पिछले हिस्से से लगाकर बोला जाये तो स होता है। विसर्ग का उच्चारण हलन्त ह् की तरह होता है।

साभार :

उच्चारणाचार्य विनम्रसागर मुनि

❒❒

# आचार्य मानतुंग

## (कथा–कथन और समय निर्णय)

**कथा कथन :**

1. आचार्य मानतुंग जी काशीवासी धनदेव ब्राह्मण के पुत्र थे। पहले श्वेताम्बर साधु थे, पीछे दिगम्बरी दीक्षा धारण कर ली, आप दोनों ही आम्नाओं में सम्मानित हैं। राजा द्वारा 48 तालों में बंद किये जाने की कथा इनके विषय में प्रसिद्ध है। इनका समय राजा हर्ष (ई. 608) के समकालीन होने से ईसा की छठीं शताब्दी माना गया है।
2. जैसा कि "भक्तामर स्तोत्र" के अन्य कथानकों से ज्ञात होता है, कि यह घटना राजा भोज के समय की है। कथा संक्षेप में इस प्रकार है – कवि कालीदास व मानतुंगाचार्य में वाद विवाद हुआ जिसमें कालिदास की पराजय होने से उन्हें लज्जित होना पड़ा, जिससे उन्होंने राजा को मानतुंगाचार्य के विरुद्ध भड़का दिया। राजा भोज का राज मद जागृत हुआ। उसने श्री मानतुंगाचार्य को 48 कोठों के भीतर जेलखाने में हथकड़ी व बेड़ी पहनाकर बंद कर दिया और बाहर कड़ा पहरा बैठा दिया। श्री मानतुंगाचार्य जी ने रात्रि में अर्हंत सर्वज्ञ वीतराग श्री आदिनाथ भगवान की भक्ति में लीन होकर स्तोत्र की रचना की। जब उन्होंने 46 वें काव्य की रचना की तब हथकड़ी व बेड़ी टूट गई और वे 48 कोठों के बाहर आ गए। राजा ने इस चमत्कार को स्वयं जाकर देखा एवं नम्रता से मानतुंगाचार्य के चरणों में नमस्कार करके अपने अपराध की क्षमा याचना की। आचार्य श्री ने राजा को क्षमाकर दिया औ फिर वहाँ से विहार कर गए, (इस कथानक के अनुसार समय ईसा की दशवीं–ग्यारहवीं शताब्दी तय किया जाता है।)
3. आचार्य प्रभाचन्द्र ने "क्रिया–कलाप" की टीका के अन्तर्गत भक्तामर स्तोत्र टीका की उत्थानिका में लिखा है –

"मानतुंगनामा सिताम्बरो महाकविः निर्ग्रन्थाचार्यवर्यैरपिनीतमहाव्याधि–प्रतिपन्ननिर्ग्रन्थमार्गो भगवन् किं क्रियमामिति ब्रुवाणो भगवता परमात्मनो गुणगणस्तोत्रं विधियतामित्यादिष्टः भक्तामरेत्यादि।"

अर्थात् – मानतुंग श्वेताम्बर महाकवि थे। एक दिगम्बराचार्य ने उनको व्याधि से मुक्त करा दिया, इससे उन्होंने दिगम्बर मार्ग ग्रहण कर लिया और पूछा कि – भगवन्! अब मैं क्या करूँ। आचार्य ने आज्ञा दी कि – परमात्मा के गुणों का स्तोत्र बनाओ। फलतः आदेशानुसार भक्तामर स्तोत्र का प्रणयन किया।

इत्यादि कथा – कथा आचार्य मानतुंग जी के बारे में उपलब्ध होते हैं।

**समय विचार :**

1. संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ विद्वान डॉ. ए.बी. कीथ ने 2 भक्तामर कथा के सम्बन्ध में अनुमान किया है कि कोठरियों के ताले पाशवद्धता संसार बन्धन का रूपक है। इस प्रकार के रूपक छठी–सातवीं शताब्दी में अनेक लिखे गये हैं। वसुदेव–हिन्दी में गर्भवास दुःख, विषय सुख, इन्द्रिय सुख, जन्ममरण के भव आदि सम्बन्धी अनेक रूपक बनाये हैं। डॉ. कीथ का यह अनुमान यदि सत्य है, तो इसका रचनाकाल छठी शताब्दी की उत्तरार्द्ध या सातवीं का पूर्वार्द्ध होना चाहिये। डॉ. कीथ ने यह भी अनुमान किया है कि मानतुंग वाण के समकालीन है।
2. सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने अपने "सिरोही का इतिहास" नामक ग्रन्थ में मानतुंग का समय हर्ष कालीन माना है। श्री हर्ष का राज्याभिषेक ई. सन् 608 में हुआ था। अतएवं मानतुंग का समय ई. सन् की 7वीं शताब्दी का मध्य भाग होना सम्भव है।
3. भक्तामर स्तोत्र के अन्तरंग परीक्षण से प्रतीत होता है कि यह स्तोत्र "कल्याणमंदिर" का परिवर्ती है। "कल्याण–मन्दिर" के रचयिता सिद्धसेन का समय छठीं शताब्दी सिद्ध किया जा चुका है।

डॉ. नेमीचन्द्र शास्त्री ज्योतिषाचार्य

साभार : तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा

# वैज्ञानिक अनुसन्धान एवं सफल प्रयोग

आर्यिका अर्हं श्री माताजी

भक्तामर स्तोत्र पर हुए वैज्ञानिक अनुसंधान एवं श्रद्धालु साधकों द्वारा नित नूतन प्रयोगों के पश्चात् आश्चर्यजनक रहस्य (परिणाम) उजागर हुए जो हमारी श्रद्धा और भावना को बलवती बनाते हैं। तथा हमें अपनी अनमोल तात्त्विक विरासत के प्रति स्वाभिमान पैदा करते हैं। एवं स्तोत्र पठन–पाठन के प्रति अभिरुचि जागृत करते हैं ऐसे कुछ रहस्यों, तथ्यों, प्रयोगों से अवगत कराना नितांत आवश्यक समझकर प्रस्तुत करती हूँ।

1. इसमें प्रयुक्त स्वर, मात्रा, व्यंजन, विसर्ग एवं घोष, अघोष, तथा वर्ण ध्वनि एवं शब्दोच्चारण कर योग विज्ञान एवं प्राणायाम के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान है, जैसे – छठवे काव्य में प्रयुक्त अल्पश्रुतं एवं श्रुतवताम् इन दो शब्दों में तं और ताम् का प्रयोग है, तं और ताम् के उच्चारण मात्र से मानव मस्तिष्क के दोनों भाग क्रियाशील हो जाते हैं जिनसे प्रज्ञा विकास एवं स्मृति विकास में कुछ ही दिनों में असाधारण परिवर्तन देखे जाते हैं अतः विद्या प्राप्ति के लिए छठवे काव्य की आराधना अनिवार्य रूप से करें। पैंतालीस वे काव्य का प्रयोग असाध्य रोगों के निवारणार्थ किया जा रहा –

इस काव्य में आगत वर्णों पर अनुसंधान होकर सिद्ध हो चुका कि – कैंसर और जलोदर जैसे रोग दूर किये जा सकते हैं– उदाहरण के लिए उद्भूत, भीषण, भार, भुग्नाः, भवन्ति इन पाँच शब्दों में 'भ' वर्ण का प्रयोग है। बारम्बार 'भ' के उच्चारण से वर्ण ध्वनि शक्तिशाली होकर प्रभावोत्पादक हो जाती है तथा कपालभाति भ्रामरी आदि योग, प्राणायाम होकर वर्ण मात्र के सही उच्चारण से अनेक रोगों का शमन करने में समर्थ सिद्ध होते हैं। तथा इसी काव्य में तीन बार विसर्ग का प्रयोग हुआ जो योग विज्ञान के आधार पर जल शोषक होने से जलोदर जैसी असाध्य बीमारी पर विजय पायी जा सकती है।

वर्तमान में डॉ. मंजू जैन, नागपुर ने इस काव्य पर शोध प्रबन्ध कर P.H.D. उपाधि प्राप्त की। तथा अनेक केन्सर ग्रस्त रोगियों को रोग मुक्त किया। आप निरन्तर देश–विदेश में भक्तामर के शिविर आयोजित कर रही हैं।

रोग कोई भी नैसर्गिक नहीं है, यह विकृति है। इसे प्रकृति मान लेना हमारी भूल है। विकृति

को दूर किया जा सकता है, प्रकृति को नहीं। रोग का मुख्य कारण रक्तकणिकाओं में वायरस, विषाणुओं का प्रवेश हो जाना है। रक्त में प्रविष्ट ये वायरस, विषाणु, जीवाणु कौन है? जिन जीवों को हमने कष्ट पहुँचाया, पीड़ा पहुँचायी, प्राण घात किये उन जीवों से हम क्षमा भी न माँग पाये फलतः वे हमारे बैरी, विरोधी, शत्रु बनकर आज हमारे शरीर रूपी घर में प्रविष्ट हो हमको बाधा पहुँचा रहें।

डॉ. इन्जेक्शन एवं दवाओं के बल पर उन विषाणु, वायरस शत्रुओं का प्राणान्त कर देता है किन्तु शत्रुता का अन्त नहीं कर पाता फलतः वे शत्रु नूतन जन्म धारण कर पुनः नवीन रोग उत्पन्न करने में सक्षम हो जाते हैं और हम बीमार के बीमार रह जाते हैं, यदि हम और आप दयावान, क्षमावान, करुणावान, अहिंसा धर्म के उपासक हैं तो हम शत्रु से क्षमा माँग लें, एक बार बोलें–मेरे शरीर में रहने वाले जीवाणुओ! मैंने आपको कष्ट पहुँचाया, दिल दुखाया आप मुझे क्षमा कर दो।

असाता को साता में परिवर्तित करने के लिए तथा शत्रुता को मित्रता में रूपान्तरित करने के लिए भक्तामर की आराधना एक सफल उपाय है।

प.पू. आचार्य श्रुतसागर जी मुनिराज को व्रेन ट्यूमर था मात्र भक्तामर के चित्र ध्यान से व्रेन ट्यूमर को अड़तालीस दिन के भीतर भक्तामर का अपने आप पर प्रयोग कर स्वयं को स्वस्थ किया।

आप आज पूर्ण स्वस्थ, मोक्षमार्ग प्रकाशी, कुशल श्रमण हैं। आपने भक्तामर स्तोत्र के रत्नचूर्ण से चित्र बनाये। आपकी अनन्य आस्था है। वर्तमान युग के आप मानतुंग हैं। पूज्य श्रुतसागर द्वारा चित्रित चित्रों का संयोजन प्रस्तुत कृति में किया है। उनके प्रति आभार एवं नमन।

स्तोत्र का भावानुवाद पूज्य गुरुवर दीक्षाचार्य शास्त्र कवि विभवसागर जी ने सम्मेद शिखर तीर्थ भूमि पर रचकर हिन्दी विज्ञ श्रोताओं को लाभ दिया। तथा मुझे कृति के संकलन एवं सम्पादन का कठिनतम कार्य सौंपा जिसे मैंने सौभाग्य मानकर किया। मैं पूज्य मानतुंगाचार्य भगवन् को प्रणामकर अपने दादा गुरु विरागसागर महाराज के कर कमलों कृति अर्पण करती हूँ।

श्रुतपंचमी पर्व–2017
विदिशा (म.प्र.)

# प्रस्तावना

- श्रमणाचार्य विभवसागर

श्री दिगम्बराचार्य मानतुङ्ग स्वामी विरचित भक्तामर स्तोत्र जैन जगत में सुप्रसिद्ध स्तोत्र है। इस स्तोत्र की महिमा प्रयोग करने के बाद ही स्वसंवेदन का विषय नहीं रह जाती प्रत्यक्ष में लाभ प्रदान करती हुई सिद्ध होती है।

स्वर विज्ञान, व्यञ्जन विज्ञान, ध्वनि-विज्ञान, मन्त्र विज्ञान, एवं स्वात्म विज्ञान से ओत-प्रोत भक्तराज मानतुङ्गाचार्य की आत्मीय, निष्काम जिन-भक्ति का सफल चामत्कारिक सुप्रयोग यह भक्तामर स्तोत्र है।

यह भक्तामर स्तोत्र भारतवर्ष के प्रायः समग्र जिनालयों, समस्त चतुर्विध संघों एवं समस्त जैन परिवारों में प्रतिदिन रुचि पूर्वक पढ़ा जाने वाला आगम-निष्ठ सर्वोत्तम, सरलतम, सर्वोपयोगी, आत्म-कल्याणकारी, अतिशय वर्द्धक, विशुद्धि कारक, ऋद्धि-सिद्धि, सुख सम्पादक, आरोग्य प्रदायक, विघ्न विनाशी, पाप प्रणाशक, पुण्य प्रकाशक, संवर-निर्जरा कारक महानतम महत्वपूर्ण आवश्यक स्तोत्र है।

भक्तामर स्तोत्र भक्ति भाव प्रधान अध्यात्म समन्वित महान स्तोत्र है। इसमें पर्यावरण को पवित्र बनाने वाले ध्वनि घटक समाहित है। स्तोत्र के पठन-पाठन करने से मानसिक, वाचिक, कायिक आत्मशान्ति प्रकट होती है। तथा दैहिक-दैविक विपदाएं पलायमान हो जाती हैं। एवं प्राकृतिक प्रकोपों से भी रक्षा होती है। यथार्थ में यह मंत्र स्तोत्र है। इसके ऋद्धि मंत्र, जाप्य मन्त्र, आराधना मंत्र, दीप मंत्र सभी अचिन्त्य प्रभावशाली हैं।

भक्तामर के यन्त्र तो दर्शन मात्र से प्रभाव दर्शाने लगते हैं। यह समग्र अनुष्ठान श्रद्धा, भक्ति, के साथ विनय एवं विवेक सापेक्ष है।

आचार्य मानतुङ्ग के भक्ति स्वरों में
वीतराग ईश्वर! प्रथम परमेश्वर! तीर्थंकर वृषभेश्वर
समाहित थे।

आचार्य भगवन्! महामुनिराज
को जब जेल ले जाया जा रहा था; उस समय
भक्तगण एवं प्रजाजन आकुल भाव पीछे-पीछे
आ रहे थे; सबके मन शंकित थे हमारे मुनिवर
का क्या होगा?

आचार्य मानतुंग तो निःशंक,
निर्भय सम्यग्दृष्टि अन्तरात्मा विरक्त पुरुष थे।
पर, जनता के भाव प्रश्न का समाधान करने में
आशीर्वाद स्वरूप दो हाथ ऊपर उठाये।

दाये हाथ में "भक्त" बाये में "अमर"
शब्द लिखा हुआ देखा।

भक्त गण समझ गये भक्त अमर
होता है। निःसंदेह रात में चमत्कार हुआ।

श्री भक्तामर स्तोत्र रचना प्रभाव से
अड़तालीस ताले टूट गये। मुनिवर प्रातः बाहर
विराजमान हो भक्तामर का पाठ कर रहे।
श्रावक समूह ने मानतुंग मुनिवर के श्री मुख से
भक्तामर स्तोत्र श्रवण किया तबसे जगत में
भक्तामर स्तोत्र पाठ प्रारंभ हो
अपने सफल प्रयोगों के कारण
अब तक निर्बाध रूप से
जयवंत हैं, आगे जयवंत रहे
इस पवित्र उद्देश्य की पूर्ति में
अक्षर भाव समर्पण

□

शास्त्र कवि
श्रमणाचार्य विभवसागर

श्रुतपंचमी पर्व, 2017
विदिशा (म.प्र.)

# भक्तामर स्तोत्र
## अनुभूत चमत्कार

श्रमणाचार्य विभवसागर

मैं दक्षिण भारत की तीर्थयात्रा पर था। हमारा ससंघ रात्रि विश्राम पंचायत भवनमेंहुआ। रात्रिक शयनकाल में मुझे चितायें जलती दिख रही थी, अन्य साधुओं की चटाई अदृश्य शक्ति खींचकर फेंक रही, इस तरह संघ पर उपसर्ग हो रहा था।

भैयाजी! ने मुझसे निवेदन किया- मैं उठकर बैठा- मैंने श्री भक्तामर स्तोत्र का भक्ति पाठ आरम्भ किया भक्तामर स्तोत्र का मात्र एक बार ही पाठ हुआ कि विघ्न बाधा दूर होगयी। सभी संघ शांति से शयन एवं धर्मध्यान कर प्रातः मुझसे पूछने लगा- हे भगवन्! आपने ऐसा क्या किया था जिसके प्रभाव से दैविक उपसर्ग दूर हो गया? मैंने कहा- यह तो श्री भक्तामर स्तोत्र का चमत्कार है। यह सुनकर श्रद्धा बलवती हुई।

मेरा आप सभी श्रद्धालुओं से यही निवेदन आप दैनिक जीवन में नित्य-प्रति इस महान स्तोत्र का भक्ति भाव सहित शुद्धि- और विशुद्धि पूर्वक पाठ एवं ऋद्धि मंत्र का जाप्य प्रारम्भ करें। अभूतपूर्व परिवर्तन हो सकता है।

भाव परिवर्तन होने पर<br>
चमत्कार होता है।<br>
भक्तामर स्तोत्र<br>
अचिन्त्य फल प्रदायी है।

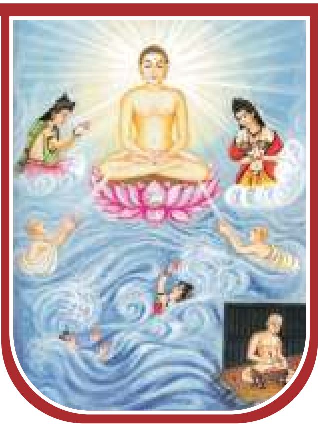

# जिनचरण वन्दन

भक्तामर–प्रणत–मौलि–मलि–प्रभाणा–
मुद्योतकं दलित–पाप–तमोवितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा–
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ।।1।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| भक्त | – भक्ति करने वाले | अमर | – देवताओं के |
| प्रणत | – विशेष रूप से झुके हुए | मौलिमणि | – मुकुट रत्न के |
| प्रभाणाम् | – कांति के | उद्योतकम् | – प्रकाश को करने वाले |
| पाप | – पाप रूपी | तमो | – अंधकार के |
| वितानम् | – विस्तार को | दलित | – नष्ट करने वाले |
| युगादौ | – युग के प्रारंभ में | भवजले | – संसार समुद्र में |
| पतताम् | – गिरते हुए, | जनानाम् | – प्राणियों को |
| आलम्बनम् | – सहारा देने वाले | जिन | – जिनेन्द्रदेव के |
| पादयुगं | – चरण युगल को | सम्यक् | – अच्छी तरह से |
| प्रणम्य | – नमस्कार करके। | | |

## भावार्थ :

भक्ति में नम्रीभूत देवों के मुकुट मणियों की शोभा को बढ़ाने वाले, पाप रूप अंधकार को हरने वाले, तथा भवसागर में डूबते हुए प्राणियों को सहारा देने वाले, हे आदिनाथ प्रभु! आपके चरणों में भली भांति भाव सहित नमस्कार करके।

# सर्व विघ्न विनाशक

## भावानुवाद

भक्तामर नमते प्रभु पद में, बड़े मुकुट शोभा।
पाप रूप अंधियारा नाशे, प्रभु पद की आभा।।
भव सागर में डूब रहे को, आप सहारा हो।
हे आदीश्वर! आदि जिनेश्वर! नमन हमारा हो ।।1।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं, णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं विश्वविघ्नहराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

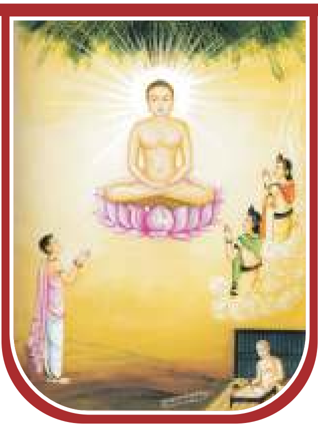

# स्तुति का संकल्प

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुरलोक-नाथैः।
स्तोत्रै - र्जगत्त्रितय - चित्त - हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥2॥

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| यः | - जो | सकल | - समस्त |
| वाङ्मय | - शास्त्र के | तत्त्व-बोधात् | - तत्वों के ज्ञान से |
| उद्भूत | - उत्पन्न | बुद्धि पटुभिः | - बुद्धि की कुशलता वाले |
| सुरलोक नाथैः | - देव लोक के स्वामी इन्द्रों द्वारा | | |
| त्रितय | - तीन जगत के | चित्तहरैः | - मन को हरण करने वाले |
| उदारैः | - महान | स्तोत्रैः | - स्तोत्रों से |
| संस्तुतः | - अच्छी तरह स्तुति किये गये ऐसे | | |
| तम् | - उन | प्रथमं | - प्रथम आदिनाथ |
| जिनेन्द्रम् | - जिनेन्द्र को | किल | - निश्चय से |
| अहम् | - मैं | अपि | - भी |
| स्तोष्ये | - स्तुति करूँगा। | | |

## भावार्थ :

समग्र द्वादशांग के तत्त्व ज्ञान से जिनकी बुद्धि उत्पन्न हुई है, ऐसे देवों द्वारा तीन लोक के जीवों को आनंदित करने वाले स्तोत्रों के द्वारा जो स्तुति किए गये हैं उन प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान की मैं स्तुति करूँगा।

# सर्व विघ्न विनाशक

## भावानुवाद

सकल शास्त्र के तत्त्व बोध से, जिनकी मति जागी।
ऐसे इन्द्रों की निर्मल मति, संस्तुति में लागी।।
भुवनत्रय आनंद प्रदायी, संस्तुतियों द्वारा।
उन आदीश्वर को मैं भजता, बहा भक्ति धारा ।।2।।

**ऋद्धि मंत्र** : ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र** : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमः ।

**दीप मंत्र** : ॐ ह्रीं नानामरसंस्तुताय सकलरोगहराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

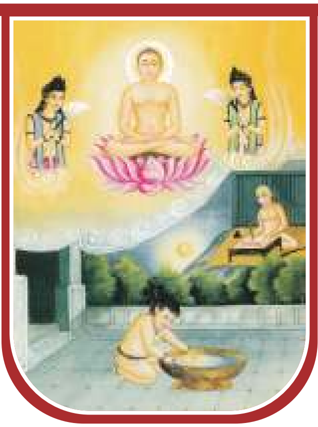

# लघुता की अभिव्यक्ति

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चित-पाद-पीठ!
स्तोतुं समुद्यत-मति-र्विगत-त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल संस्थितमिन्दु-बिम्ब-
मन्य: क इच्छति जन: सहसा ग्रहीतुम्।।3।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| विबुध | – देवों के द्वारा | अर्चित | – पूजित है |
| पादपीठ | – चरण रखने का आसन जिनका ऐसे जिनेन्द्र देव!, | | |
| बुद्ध्या विनाऽपि | – बुद्धि के बिना भी | | |
| विगतत्रप: | – लज्जा रहित | अहम् | – मैं |
| स्तोतुम् | – स्तुति करने के लिये | समुद्यतमति | – तैयार बुद्धि वाला |
| जल संस्थितम् | – पानी में स्थित | इन्दुबिम्बम् | – चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को |
| बालम् | – बालक को | विहाय | – छोड़कर |
| अन्य: क: | – अन्य कौन | जन: | – मनुष्य |
| सहसा | – बिना विचारे ही | ग्रहीतुम् | – पकड़ने के लिये |
| इच्छति | – इच्छा करता है। | | |

## भावार्थ :

देवों द्वारा पूजित है आपका आसन ऐसे हे जिनेन्द्र देव! मैं बुद्धि के बिना भी और लज्जा रहित होकर आपकी स्तुति करने को तैयार हुआ हूँ, मेरा यह कार्य उस अबोध बालक के समान है जो जल में झलक रहे चन्द्रमा को पकड़ने की इच्छा करता है।

# सर्व सिद्धि दायक

## भावानुवाद

**देवों द्वारा पूजित आसन, ऐसे जिनवर की।**
**बुद्धिहीन तैयार हुआ मैं, संस्तुति को उनकी।।**
**जल में झलक रहे चंदा को, ज्यों बालक पकड़े।**
**लाज त्याज हम काज मान ज्यों, संस्तुति को उमड़े ।।3।।**

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यः सर्वसिद्धिदायकेभ्यो नमः स्वाहा ।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं मत्यादिसुज्ञानप्रकाशनाय क्लीं महाबीजाक्षर–सहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# जिनदेव के अवर्णनीय गुण

वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र! शशांक-कान्तान्
कस्ते क्षमः सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं
को वा तरीतुमलमम्बु-निधिं भुजाभ्याम्॥4॥

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गुण समुद्र | – | गुणों के सागर | ते | – | तुम्हारे |
| शशांक | – | चन्द्रमा की कांति के समान | कान्तान् | – | सुन्दर |
| गुणान् | – | गुणों को | वक्तुं | – | कहने के लिये |
| बुद्ध्या | – | बुद्धि से | सुरगुरु | – | देवों के गुरु बृहस्पति के |
| प्रतिमः | – | समान | अपि | – | भी |
| कः | – | कौन | क्षमः | – | समर्थ है? |
| कल्पांत काल | – | प्रलय काल की | पवन | – | वायु से |
| उद्धत | – | प्रचण्ड हुए | नक्र चक्रं | – | मगरमच्छों से सहित |
| अम्बुनिधिम् | – | समुद्र को | भुजाभ्याम् | – | दो भुजाओं से |
| तरीतुम् | – | तैरने के लिये | को वा | – | कौन पुरुष |
| अलम् | – | समर्थ है? अर्थात् कोई भी नहीं। | | | |

## भावार्थ :

हे गुण सागर! चन्द्रकांति के समान उज्ज्वल आपके गुणों का वर्णन करने के लिए सुरगुरु भी समर्थ नहीं हैं जैसे कि प्रलयकाल की वायु से उछलते हुए और मगरमच्छों से भरे हुए समुद्र को भुजाओं से तैरकर पार पाने में कौन समर्थ है? अर्थात् कोई नहीं।

# जल-जन्तु भय मोचक

## भावानुवाद

हे गुणसागर! शरद चन्द्रसम, उज्ज्वल गुण गाने।
सुरगुरु भी सामर्थ्य न रखता, तब गुण गा पाने।।
मगर-मच्छ भी उछल रहे हों, लहर भयंकर हो।
कौन भुजाओं से तर सकता, ऐसे सागर को ।।4।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नम: स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जलयात्राजलदेवताभ्यो नम: स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं नानादु:खसमुद्रतारणाय क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

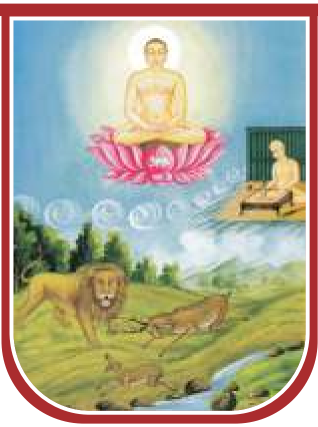

# भक्ति की प्रेरणा

सोऽहं तथापि तव भक्ति -वशान्मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगत-शक्ति -रपि प्रवृत:।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निजशिशो: परिपालनार्थम्।।5।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| मुनीश | – हे मुनियों के ईश्वर! | तथापि | – फिर भी |
| अहम् | – मैं | स: | – वह |
| विगत-शक्ति: | – शक्ति रहित होकर | अपि | – भी |
| तव | – तुम्हारी | भक्तिवशात् | – भक्ति के वश |
| स्तवं | – स्तुति | कर्तुं | – करने के लिये |
| प्रवृत्त: | – तैयार करता हूँ | मृगी | – हरिणी |
| आत्म वीर्यम् | – अपनी शक्ति को | अविचार्य | – विचार नहीं करके |
| प्रीत्या | – प्रीति वशात् | निज शिशो: | – अपने शिशु को |
| परिपालनार्थम् | – बचाने के लिये | किम् | – क्या |
| मृगेन्द्रम् | – सिंह के सन्मुख | न अभ्येति | – नहीं जाती है? अर्थात् जाती है। |

## भावार्थ :

हे मुनीनाथ! वह मैं शक्ति हीन हो भक्ति के वशीभूत हुआ आपकी स्तुति करने तैयार हूँ। जैसे अपनी शक्ति का विचार किये बिना भी शिशु नेह में रंगी हरिणी क्या अपना वत्स बचाने के लिए सिंह के सम्मुख अपना प्रयास नहीं करती क्या? करती ही है।

# नेत्र-रोग संहारक

## भावानुवाद

वह मैं हूँ जो शक्ति बिना भी, भक्तिवशी होके।
संस्तव करने को तत्पर हूँ, बस तेरा होके।।
सिंह के सम्मुख जाती हरिणी, सुध–बुध को खोके।
अपना वत्स बचा लेती है, प्रीतिवती होके ।।5।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

**जाप्य मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं सर्वसंकटनिवारणेभ्यः सुपार्श्वयक्षेभ्यो नमो नमः स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं सकलकार्यसिद्धिकराय क्लीं महाबीजाक्षर–सहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# स्तुति में भक्ति ही कारण

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास - धाम
त्वद्भक्ति रेव मुखरी कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चाम्र-चारु-कलिका-निकरैक-हेतुः।।6।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| अल्पश्रुतं | - अल्प ज्ञान वाला | श्रुतवताम् | - विद्वानों की |
| परिहास धाम | - हँसी का पात्र मैं | माम् | - मुझको |
| त्वद् भक्तिः | - अपकी भक्ति | एव | - ही |
| बलात् | - बलपूर्वक | मुखरी | - वाचाल |
| कुरुते | - कर रही है | कोकिलः | - कोयल |
| किल | - निश्चय से | मधौ | - वसन्त ऋतु में |
| मधुरम् | - मीठा | विरौति | - कूकती है |
| तत् च | - उसमें | आम्र | - आम की |
| चारु | - सुन्दर | कलिका | - मंजरी अथवा बौर |
| निकर | - समूह ही | एक | - मात्र |
| हेतुः | - कारण है। | | |

## भावार्थ :

हे जिनेन्द्र! मैं अल्पज्ञानी विद्वानों के द्वारा अभी हँसी का पात्र बनूँगा, फिर भी आपकी भक्ति मुझे बाचाल कर रही है, जैसे बसंत ऋतु में आम्रमंजरी कोयल को कुहकने के लिए स्वयं प्रेरित करती है।

# सरस्वती विद्या प्रकाशक

## भावानुवाद

अभी हँसी का पात्र बनूँगा, मैं विद्वानों से।
भक्ति आपकी बुला रही है, हम अंजानों से।।
कोयल कूँज रही क्यों वन में, हाँ वसंत आया।
अरे आम्र की सुन्दर कलिका, ने मन उमड़ाया।।6।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोठ्ठबुद्धीणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रां श्रीं श्रूं श्रः हं सं थः थः थः ठः ठः सरस्वती भगवती विद्याप्रसादं कुरु कुरु स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं याचितार्थ प्रतिपादनशक्तिसहिताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# पापविनाशक जिनवर स्तुति

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति सन्निबद्धं
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीर-भाजाम्।
आक्रान्त-लोकमलि-नील-मशेषमाशु
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वर-मन्धकारम्।।7।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्वत् | - | आपकी | संस्तवेन | - | स्तुति करने से |
| शरीरभाजाम् | - | संसारी प्राणियों के | भवसन्तति | - | अनेक जन्मों में |
| सन्निबद्धम् | - | बंधे हुए | पापम् | - | पाप कर्म |
| आक्रान्त लोकम् | - | समस्त लोक में फैले हुए | अलि नीलम् | - | भंवरे के समान काले |
| सुर्यांशु | - | सूर्य की किरणों से | भिन्नम् | - | छिन्न-भिन्न |
| शार्वरम् | - | रात्रि में होने वाले | अशेषम् | - | सम्पूर्ण |
| अन्धकारम् इव | - | अंधकार की तरह | क्षणात् | - | क्षणभर में |
| आशु | - | शीघ्र ही | क्षयम् | - | विनाश को |
| उपैति | - | प्राप्त हो जाता है। | | | |

## भावार्थ :

हे जिनेन्द्र देव! भव-भव में बाँधे हुए पाप आपकी स्तुति करने से क्षणमात्र में वैसे ही नष्ट हो जाते हैं जैसे लोक में फैला हुआ सघन अंधकार भी सूर्य की एक किरण से नष्ट हो जाता है।

# सर्व क्षुद्रोपद्रव निवारक

## भावानुवाद

नाथ! आपकी संस्तुति से ही, हम जग जीवों के।
सघन कर्म के बन्ध नशेंगे, बाँधे भव-भव के।।
विश्व व्याप्त भौरें सा काला, घोर अँधेरा ज्यों।
सूर्य किरण से छिन्न-भिन्न हो, हट जाता है त्यों ।।7।।

ऋद्धि मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं झ्रौं-झ्रौं नमः स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं हं सं श्रां श्रीं क्रौं क्लीं सर्वदुरितसंकटक्षुद्रोपद्रव कष्टनिवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

दीप मंत्र : ॐ ह्रीं सकलपापफलकुष्टनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# जिनवर की प्रभुता का प्रभाव

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद–
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ता–फल–द्युति–मुपैति ननूदबिन्दुः।।8।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाथ | – हे स्वामिन्! | इति | – ऐसा |
| मत्वा | – मानकर | तनुधिया अपि | – अल्प बुद्धि वाला होता हुआ भी |
| मया | – मेरे द्वारा | इदं | – यह |
| तव | – तुम्हारी | संस्तवनम् | – उत्तम स्तुति |
| आरभ्यते | – प्रारंभ की जाती है | तव | – आपके |
| प्रभावात् | – प्रभाव से यह स्तुति | सतां | – सज्जनों के |
| चेतः | – चित्त को | हरिष्यति | – हरेगी |
| ननु | – निश्चित ही | उद बिन्दुः | – जल की बूँद |
| नलिनी | – कमलिनी के | दलेषु | – पत्तों पर |
| मुक्ताफल | – मोती की | द्युतिम् | – कान्ति को |
| उपैति | – प्राप्त होती है। | | |

## भावार्थ :

हे नाथ! ऐसा मानकर ही मुझ अल्पबुद्धि ने आपकी स्तुति आरंभ की है। यह स्तोत्र आपके प्रभाव से सज्जनों को आनंदित करेगा। जैसे कमलिनी के पत्र पर पड़ी हुई पानी की बूँद जन–मन को आनंदित करती है।

# सर्वारिष्ट रोग निवारक

## भावानुवाद

अरे कमलिनी के पत्ते पर, पड़ी ओस बूँदें।
मोती तुल्य दमकती उस पर, जन–मन आनन्दें।।
यही मानकर मेरे द्वारा, यह संस्तव रचना।
तव प्रभाव से हो जायेगी, सज्जन चित् हरना ।।4।।

ऋद्धि मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो पादाणुसारिणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा। ॐ ह्रीं लक्ष्मणरामचन्द्र देव्यै नमः स्वाहा।

दीप मंत्र : ॐ ह्रीं अनेकसकंटसंसारदुःखनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# प्रभु नाम ही पापनाशक

आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त दोषं
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्र - किरणः कुरुते प्रभैव
पद्मा-करेषु जलजानि विकास-भाञ्जि।।9।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तव | - | तुम्हारी | अस्त-समस्त दोषम् | - | सर्व दोषों से रहित |
| स्तवनं | - | स्तुति | दूरे | - | दूर |
| आस्ताम् | - | रहने दो | किन्तु त्वत् | - | पर आपकी |
| संकथा | - | उत्तम कथा | अपि | - | भी |
| जगताम् | - | जगत के प्राणियों के | दुरितानि | - | पापों को |
| हन्ति | - | नष्ट करती है | सहस्र किरणः | - | हजार किरण वाला सूर्य |
| दूरे | - | दूर | आस्तां | - | रहता है, पर उसकी |
| प्रभा | - | प्रभा | एव | - | ही |
| पद्माकरेषु | - | सरोवरों में | जलजानि | - | कमलों को |
| विकासभाञ्जि | - | विकसित | कुरुते | - | कर देती है। |

## भावार्थ :

हे भगवन्! पूर्ण निर्दोष आपका-स्तोत्र तो दूर की बात है आपका नाम जाप ही संसारी प्राणियों के पापों को हर लेता है। जैसे आकाश में रहने वाला सूर्य तो रहे उसकी किरणें ही सरोवरों में कमलों को खिला देती है।

# अभीप्सित फलदायक

## भावानुवाद

दूर रहे वह संस्तव तेरा, जो निर्दोष अरे।
तेरी कथा मात्र ही जग के, सारे पाप हरे।।
दूर दिवाकर नभ में रहता, जग प्रभाव फैले।
सरोवरों में देखो सुन्दर, सुन्दर कमल खिले।।9।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो संभिण्ण सोदाराणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः फट् स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो भगवते जय यक्षाय ह्रीं ह्रूं नमः स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं सकलमनोवांछितफलदात्रे क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

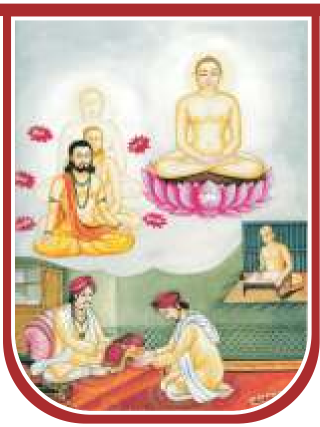

# समपद दायक भक्ति

नात्यद्भुतं भुवन-भूषण! भूतनाथ!
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्त - मभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्म-समं करोति।।10।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भुवन भूषण | – | हे! तीन जगत के भूषण! | भूतनाथ | – | हे! प्राणियों के स्वामिन्! |
| भूतैः | – | वास्तविक | गुणैः | – | गुणों के द्वारा |
| भवन्तम् | – | आपकी | अभिष्टुवन्तः | – | स्तुति करने वाले पुरुष |
| भुवि | – | पृथ्वी पर | भवतः | – | आपके |
| तुल्याः | – | समान | भवन्ति | – | हो जाते हैं |
| इति | – | यह बात | अत्यद्भुतं | – | अति आश्चर्य कारक |
| न | – | नहीं है | वा ननु | – | अथवा निश्चित ही |
| तेन | – | उस स्वामी से | किम् | – | क्या प्रयोजन है? |
| यः | – | जो | इह | – | इस लोक में |
| आश्रितम् | – | अपने आश्रित पुरुष को | भूत्या | – | सम्पत्ति के द्वारा |
| आत्मसमम्! | – | अपने समान | न करोति | – | नहीं करता है। |

## भावार्थ :

हे त्रिलोकभूषण! आपके स्तुति करने वाले पुरुष यदि आपके समान गुणों को प्राप्त कर लें तो कौन सा आश्चर्य है! कुछ भी नहीं। क्योंकि वह मालिक ही क्या जो सेवक को अपने समान न बना ले ?

# उन्मत्त कूकर विष निवारक

## भावानुवाद

भक्त तिहारे तेरे सम हों, कुछ आश्चर्य नहीं ।
शिष्यों को आचार्य बनायें, खुद आचार्य यहीं ।।
निर्धन भी धनपति सेवा से, ज्यों धनवान बने ।
भक्त आपको भजते-भजते, त्यों भगवान बने ।।10।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुध्दाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः सिद्धबुद्धकृतार्थो भव भव वषट् सम्पूर्णम् स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हज्जिनस्मरणजिनसम्भूताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

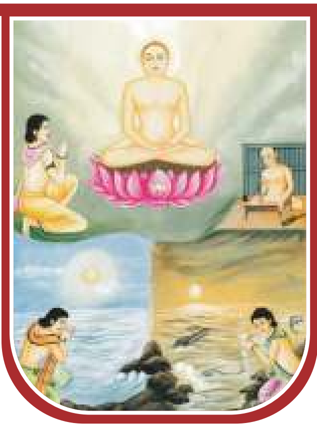

# निर्निमेष दर्शनीय स्वरूप

दृष्ट्वा भवन्त-मनिमेष-विलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधे-रसितुं क इच्छेत्।।11।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| अनिमेष | – बिना पलक झपकाये | विलोकनीयम् | – देखने योग्य |
| भवन्तम् | – आपको | दृष्ट्वा | – देखकर |
| जनस्य | – मनुष्य के | चक्षुः | – नेत्र |
| अन्यत्र | – और कहीं पर | तोषम् | – संतोष को |
| न उपयाति | – नहीं पाते हैं | शशिकरद्युति | – चन्द्रमा के समान कांति वाले |
| दुग्ध-सिन्धोः | – क्षीर सागर के | पयः | – जलको |
| पीत्वा | – पीकर | कः | – कौन मनुष्य |
| जलनिधेः | – लवण समुद्र के | क्षारम् | – खारे |
| जलम् | – पानी को | रसितुम् | – चखने के लिये |
| इच्छेत् | – इच्छा करेगा। | | |

## भावार्थ :

हे वीतरागी देव! आपके दर्शन करके जो आत्म सुख मिलता है वह अन्य देवी-देवताओं के दिखने पर नहीं, सच है क्षीर सागर के मधुर जलपान करने पर जो सुख मिलता है वह लवण समुद्र के खारे पानी पीने पर नहीं ?

# आकर्षण बढ़ाने वाला

## भावानुवाद

क्षीर सिन्धु का क्षीर पिया हो, मधुर–मिठैया सा।
वह क्या खरा नीर पियेगा, लवण समुद्रों का ।।
जिसने देखा वीतरागमय, यह स्वरूप तेरा।
उसे कहाँ सन्तोष मिलेगा, जो जिनपद चेरा ।।11।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुध्दाणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रां श्रीं कुमतिनिवारिण्यै महामायायै नमः स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं सकलतुष्टिपुष्टिकराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

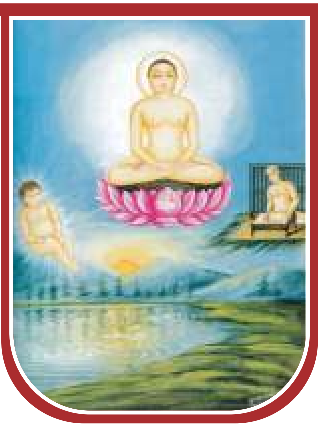

# अद्वितीय अनुपम सौन्दर्य

यैः शान्त–राग–रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापित–स्त्रिभुवनैक–ललामभूत!
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समानमपरं नहि रूप–मस्ति ।।12।।

## अन्वयार्थ :

त्रिभुवनैक – हे तीनों लोकों के एक अद्वितीय
ललामभूत – सर्वश्रेष्ठ सौन्दर्य के धारक भगवन्!

| | | | |
|---|---|---|---|
| यैः | – जिन | शान्त राग | – राग रहित |
| रुचिभिः | – सुन्दर | परमाणुभिः | – परमाणुओं से |
| त्वम् | – तुम | निर्मापितः | – बनाये गये हो |
| खलु | – निश्चित ही | पृथिव्यां | – पृथ्वी पर |
| ते | – वे | अणवः | – परमाणु |
| अपि | – भी | तावन्त | – उतने |
| एव | – ही, हैं, | यतः | – क्योंकि |
| यत्ते समानम् | – जो आपके समान | अपरं | – दूसरा |
| रूप | – रूप | नहि | – नहीं |
| अस्ति | – हैं। | | |

## भावार्थ :

हे त्रिलोक सुन्दरतम प्रभु! जिन वीतराग परमाणुओं से आपका यह शरीर रचा है वे परमाणु इस पृथ्वी पर उतने ही थे, इसीलिए आपके समान सुन्दर रूप का धारक कोई दूसरा नहीं है। आप ही सर्व सुन्दर हैं।

# वांछित रूप प्रदायक

## भावानुवाद

हे त्रिलोक सुन्दरतम प्रभुवर! अहो रूप पाया ।
वीतरागमय शुभ अणुओं से, रची पुण्य काया ।।
उतने ही थे वे परमाणु, जिनसे आप रचे ।
इसीलिए तो तुम सा सुन्दर, कोई नहीं दिखे ।।12।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिदबुध्दाणं ।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो भगवते अतुल बल पराक्रमाय आदीश्वर यक्षाधिष्ठाय ह्रां ह्रीं नमः।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं निजधर्माचिताय झ्रौं क्रौं रं ह्रीं नमः।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं वांछितरूपफलशक्तये क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

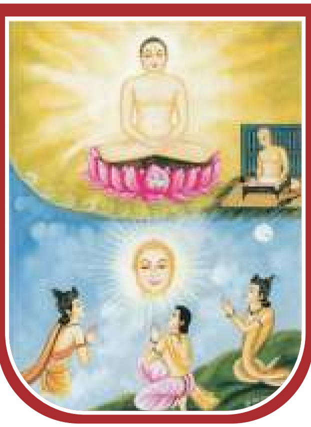

# चन्द्रातिशायी जिनमुख

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरग - नेत्रहारि
निःशेष - निर्जित - जगत्त्रितयोपमानम्
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पांडु-पलाश-कल्पम्।।13।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| सुर | - देव | नर | - मनुष्य |
| उरग | - नागों के | नेत्र | - नेत्रों को |
| हारि | - हरण करने वाला | निःशेष | - समस्त |
| जगत्त्रितय | - तीन जगत की | उपमानम् | - उपमाओं को जिसने |
| निर्जित | - जीत लिया है | ते | - आपका |
| वक्त्रं | - मुख | क्व | - कहाँ और |
| निशाकरस्य | - चन्द्रमा का | कलंकमलिनम् | - कलंक-से मलिन |
| बिम्ब | - बिम्ब | क्व | - कहाँ |
| यत् | - जो कि | वासरे | - दिन में |
| पलाशकल्पम् | - पलाश के पत्ते के समान | पाण्डु | - फीका |
| भवति | - हो जाता है। | | |

## भावार्थ :

हे देवाधिदेव! सुर नर नाग नयन मनहारी उपमातीत कहाँ तो आपका श्री मुख? और पलाश के फूल सा फीका पड़ने वाला कलंकी चन्द्रमा कहाँ? सच है आप अनुपम है।

# लक्ष्मी सुख दायक

## भावानुवाद

सुर नर नाग नयन मनहारी, श्री मुख की आभा।
जीत चुकी है लोकत्रय की, कीर्तिवती शोभा ॥
कहाँ कलंकी मलिन चन्द्रमा, काला-काला सा।
दिन में जो फीका पड़ जाता, पुष्प छेवला सा ॥13॥

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो रिजुमदीणं अष्ट सिद्धि क्रौं ह्रौं छम्ल्व्र्यूं युक्ताय नमः।

**जाप्य मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं हं सः ह्रौं ह्रां ह्रीं द्रां द्रीं द्रौं द्रः मोहिनी सर्ववश्यं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ नमो भगवते सौभाग्य रूपाय ह्रीं नमः।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं लक्ष्मीसुखविधायकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामः स्वाहा।

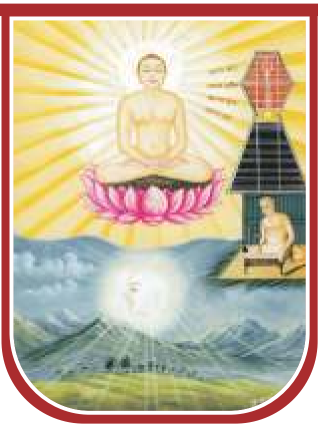

# त्रिभुवनव्यापी गुणकोष

संपूर्ण-मण्डल-शशांक-कला-कलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास्त्रि-जगदीश्वर-नाथमेकं
कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम्।।14।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्रिजगदीश्वर | – | हे! तीन जगत के ईश्वर | तव | – | आपको |
| संपूर्ण मण्डल शशांक | – | पूर्ण चन्द्र मण्डल के | | | |
| कला-कलाप | – | कला समूह के समान | शुभ्राः | – | उज्ज्वल |
| गुणाः | – | गुण | त्रिभुवनम् | – | तीनों लोकों को |
| लंघयन्ति | – | लांघ रहे हैं, सो उचित ही है क्योंकि | | | |
| ये | – | जो | एकम् | – | एक |
| त्रिजगदीश्वरनाथम् | – | तीन लोक के देवाधिदेव के | | | |
| संश्रिताः | – | आश्रित हैं | तान् | – | उन्हें |
| यथेष्टम् | – | स्वेच्छानुसार | संचरतः | – | विचरण करने से |
| कः | – | कौन | | | |
| निवारयति | – | रोक सकता है? अर्थात् कोई नहीं। | | | |

## भावार्थ :

हे त्रिलोकीनाथ! पूनम के चन्द्रमा की चाँदनी के समान उज्ज्वल आपके गुण तीन लोक में चर्चित और अर्चित हो रहे हैं। सच है जिन्होंने आपका आश्रय ले लिया उन्हें स्वतंत्र गमन से कौन रोक सकता है।

# आधि-व्याधि नाशक

## भावानुवाद

**तीन लोक में फैल रहे हैं, तेरे गुण ऐसे।**
**नभमण्डल से भूमण्डल पर, चन्द्रकला जैसे ॥**
**तीन लोक के नाथ आपका, लिये सहारा जो ।**
**कौन रोक सकता है उनको, स्वतंत्र विचरें वो ॥14॥**

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं ।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो भगवती गुणवती महामानसी स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं भूतप्रेतादिभयबाधानिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

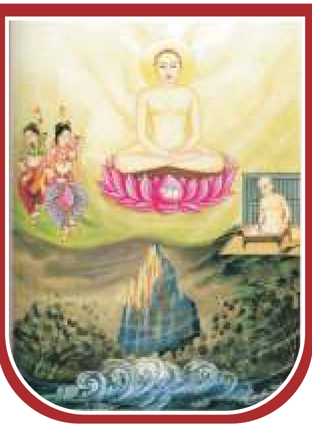

# मेरु सम अविचल ध्यान

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि–
र्नीतं मनागपि मनो न विकार–मार्गम्।
कल्पान्त–काल मरुता चलिता–चलेन
किं मंदराद्रि–शिखरं चलितं कदाचित्।।15।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यदि | – | अगर | त्रिदशांगनाभिः | – | देवांगनाओं के द्वारा |
| ते | – | आपका | मनः | – | मन |
| मनाक् | – | जरा–सा | अपि | – | भी |
| विकार–मार्गम् | – | विकार भाव को | न नीतम् | – | प्राप्त नहीं हुआ तो |
| अत्र | – | इसमें | किम् | – | क्या |
| चित्रम् | – | आश्चर्य है? | चलितचलेन | – | पर्वतों को चलायमान करने वाली |
| कल्पांत काल | – | प्रलय काल की | मरुता | – | पवन से |
| किम् | – | क्या | मन्दराद्रि शिखरम् | – | सुमेरु का शिखर |
| कदाचित् | – | कभी भी | चलितम् | – | चलायमान हुआ है? अर्थात् नहीं। |

## भावार्थ :

हे जितेन्द्रिय प्रभु! स्वर्गीय अप्सराओं द्वारा भी यदि आपका मन जरा भी विचलित नहीं तो इसमें क्या आश्चर्य की बात है? क्या कभी प्रलयवायु के द्वारा भी सुमेरु पर्वत चलायमान होता है? नहीं।

# सम्मान सौभाग्य संवर्द्धक

## भावानुवाद

अरे यहाँ आश्चर्य नहीं कुछ, यह मन जो तेरा ।
रंचमात्र भी हुआ न विचलित, सुर–परियों द्वारा ।।
प्रलय काल की जिस वायु से, पर्वत उड़े चले ।
क्या सुमेरु पर्वत की चोटी, किंचित् कभी हिले ।।15।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ णमो भगवती गुणवती सुमीमा पृथ्वी वज्रशृंखलामानसी महामानसी स्वाहा।
ॐ नमो अचिन्त्य बल पराक्रमाय सर्वार्थकामरूपाय ह्रां ह्रीं क्रौं श्रीं नमः।
ॐ अप्रतिचक्राय ह्रीं नमः।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं मेरुवन्मनोबलकरणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

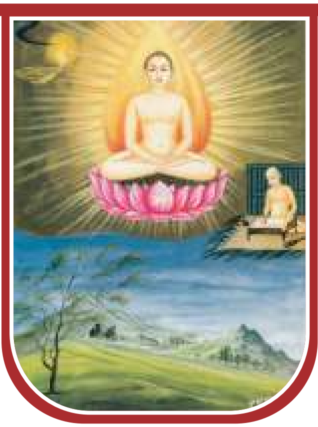

# अद्वितीय दीपक

निर्धूम – वर्ति – रपवर्जित – तैल – पूरः
कृत्स्नं जगत्त्रय – मिदं प्रकटी–करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्व–मसि नाथ! जगत्प्रकाशः।।16।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाथ | – हे भगवान्! | त्वम् | – तुम |
| निर्धूमवर्ति | – धुआँ और बत्ती से रहित | अपवर्जित तैल पूरः | – लबालब तेल से रहित |
| भूत्वा | – होकर भी | इदं | – इस |
| कृत्स्नं | – समस्त | जगत्त्रयम् | – तीन जगत को |
| प्रकटी–करोषि | – प्रकाशित कर रहे हो | चलिता चलानाम् | – पर्वतों को चलाय मान करने वाली |
| मरुता | – वायु के | जातु | – कभी भी |
| गम्यः न | – गम्य नहीं हो (इसलिए) | त्वम् | – आप |
| जगत्प्रकाशः | – संसार को प्रकाशित करने वाले | | |
| अपरः | – अद्वितीय | दीपः असि | – दीपक हो। |

## भावार्थ :

हे भगवन्! आप राग द्वेष मोह रूपी तैल धुआ वाती रहित त्रिलोक प्रकाशक अपूर्व दीपक हो जो प्रलय पवन से भी नहीं बुझाये जाते।

# सर्व विजय दायक

## भावानुवाद

**धूम व वत्ती तेल रहित तुम, अनुपम दीपक हो ।**
**विश्व प्रकाशित करने वाले, चिन्मय दीपक हो ।।**
**प्रलय वायु भी बुझा न पाये, ऐसा दीपक जो ।**
**परम ज्योति परमात्म प्रकाशक, वह बुध दीपक हो ।।16।।**

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमः सु–मंगला सुसीसा नाम देवी सर्वसमीहितार्थं वज्रश्रृंखलां कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं जयाय नमः। ॐ श्री विजयाय नमः। ॐ क्रीं अपराजिताय नमः। ॐ ग्लौं मणिभद्राय नमः।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं त्रैलोक्यलोकवशंकराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय ह्रदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

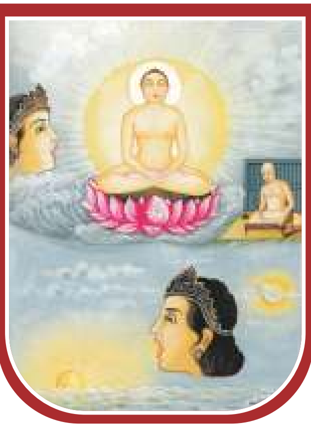

# सूर्यातिशायी जिनसूर्य

नास्तं कदाचि-दुपयासि न राहु-गम्यः
स्पष्टी-करोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर - निरुद्ध - महाप्रभावः
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र! लोके॥17॥

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| मुनीन्द्र | - हे मुनीश्वर! | कदाचित् | - कभी भी |
| अस्तं | - अस्त | न उपयासि | - नहीं होते हो |
| न राहुगम्यः | - न राहु से ग्रसित होते हो | सहसा | - सहज ही |
| जगन्ति | - तीनों लोकों को | युगपत् | - एक साथ |
| स्पष्टीकरोषि | - प्रकाशित करते हो | अम्भोधरोदर | - मेघों के द्वारा आपका |
| निरुद्ध महाप्रभावः | - महाप्रभाव रुकता | न | - नहीं है, अतः |
| लोके | - लोक में आप | सूर्यातिशायि | - सूर्य से भी अतिशय युक्त |
| महिमा | - महिमा वाले | असि | - हो। |

## भावार्थ :

हे मुनिनाथ! आप केतु से रोके नहीं जाते, बादलों से ढके नहीं जाते और आप अपने केवलज्ञान प्रभा से तीनों लोकों को एक साथ प्रकाशित करते हो, सच है आप तो सूरज से भी बड़कर हैं।

# सर्व रोग निरोधक

## भावानुवाद

अस्त कभी भी ना होते हो, केतु नहीं ग्रसता।
मेघों द्वारा कभी आपका, ना प्रभाव रुकता ॥
एक साथ ही लोकत्रय के, आप प्रकाशक हो।
अतः आप सूरज से बढ़कर, महिमा धारक हो ॥17॥

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठांग महानिमित्त कुशलाणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ णमो णमिऊण अट्टे मट्टे क्षुद्रविघट्टे क्षुद्रपीड़ां जठर पीड़ां भंजय–भंजय सर्वपीड़ां सर्वरोग निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमो अजित शत्रु पराजयं कुरु कुरु स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं पापन्धकारनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

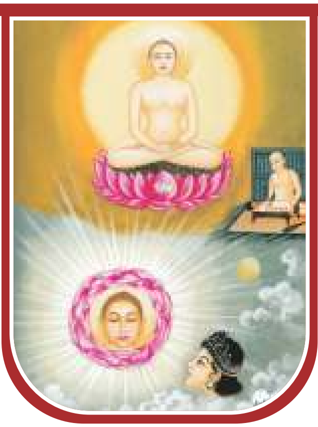

# अद्भुत मुखचन्द्र

नित्योदयं दलित - मोह - महान्धकारं
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज-मनल्प-कांति
विद्योतयज्जग-दपूर्व-शशांक-बिम्बम्।।18।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नित्योदयम् | – | हमेशा उदित रहने वाला | मोह महान्धकारम् | – | मोह रूपी अंधकार को |
| दलित | – | नष्ट करने वाला | राहुवदनस्य | – | राहु के मुख के द्वारा |
| न गम्यम् | – | ग्रसे जाने के अयोग्य | वारिदानाम् | – | मेघों के द्वारा |
| न गम्यम् | – | छिपाने के अयोग्य | अनल्प कान्ति | – | अधिक कांति वाला और |
| जगत् | – | संसार को | विद्योतयत् | – | प्रकाशित करने वाला |
| तव | – | आपका | मुखाब्जम् | – | मुख कमल रूपी |

अपूर्व शशांक-बिम्बम् – अपूर्व चन्द्र मण्डल

विभ्राजते – सुशोभित होता है।

## भावार्थ :

हे नाथ! सदा उदय रहने वाला, मोह महातम हरने वाला, राहु द्वारा नहीं रुकने वाला, बादलों द्वारा नहीं ढकने वाला आपका मुख चन्द्रमा महाकान्तिधारी एवं परम शान्तिकारी अपूर्व चन्द्रमा है।

# शत्रु सैन्य स्तंभक

## भावानुवाद

मोह महातम हरने वाला, सदा उदित रहता।
राहु नहीं ग्रस पाता जिसको, ना बादल ढकता ।।
चमक रहा चन्दा सा मुखड़ा, महाकान्ति धारी ।
ऐसा चन्दा कभी न देखा, परम शान्ति कारी ।।18।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो विवुलरिद्धिपत्ताणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ णमो भगवते जय विजयमोहय मोहय स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा।
ॐ नमो शास्त्र ज्ञान बोधनाय परमर्द्धि प्राप्ति जयं कराय ह्रां ह्रीं क्रौं श्रीं नमः।
ॐ नमो भगवते शत्रु शैन्य निवारणाय यं यं यं क्षुर विध्वंसनाय नमः क्लीं ह्रीं नमः। ॐ ह्रीं परमर्द्धये नमः।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं चन्द्रवत्सर्वलोकोद्योतनकराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# अन्धकारनाशक जिनमुख

किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा?
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमःसु नाथ।
निष्पन्न-शालिवनशालिनि-जीवलोके
कार्यं कियज्जलधरै-र्जलभारनम्रैः।।19।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नाथ! | – | हे स्वामिन्! | तमःसु | – | अन्धकार के |
| युष्मन्मुखेन्दु | – | आपके मुखचन्द्र द्वारा | दलितेषु | – | नष्ट हो जाने पर |
| शर्वरीषु | – | रात में | शशिना | – | चन्द्रमा से |
| वा | – | अथवा | अह्नि | – | दिन में |
| विवस्वता | – | सूर्य से | किम् | – | क्या प्रयोजन है? |
| निष्पन्न | – | पके हुये | शालिवन | – | धान के खेतों से |
| शालिनि | – | शोभायमान | जीवलोके | – | संसार में |
| जलभारनम्रैः | – | जल के भार से झुके हुये | जलधरैः | – | मेघों से |
| कियत् कार्यम् | – | कितना काम रह जाता है? | | | |

## भावार्थ :

हे नाथ! ज्यों फसलों के पक जाने पर बादलों के बरसने से क्या लाभ? त्यों ही आपके मुख चन्द्र द्वारा अंधकार हर लेने पर सूर्य और चन्द्रमा से क्या लाभ? कुछ भी नहीं?

# उच्चाटनादि रोधक

## भावानुवाद

नाथ आपका मुख चन्दा जब, अन्धकार हरता।
दिन में रवि वा निशि में शशि की, क्या आवश्यकता।।
धान्य खेत पक जाने पर ज्यों, भरे बादलों से।
अरे लाभ क्या हो सकता है, जल बरसाने से ।।19।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः य क्ष ह्रीं वषट् नमः स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं सकलकालुष्यदोषनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# आप जैसा ज्ञान अन्य देवों में कहाँ

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरि – हरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि।।20।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| कृतावकाशम् | – अवकाश को प्राप्त | ज्ञानम् | – ज्ञान |
| यथा त्वयि | – जिस तरह आप में | विभाति | – शोभायमान होता है |
| तथा | – उस तरह | हरिहरादिषु | – हरि–हर आदिक |
| नायकेषु | – देवों में | न विभाति | – शोभायमान नहीं होता |
| तेजः | – तेज | महामणिषु | – महामणियों में |
| यथा | – जैसे | महत्त्वम् याति | – महत्त्व को प्राप्त होता है |
| तु | – निश्चय से | एवं | – वैसे (महत्त्व को) |
| किरणाकुले अपि | – किरणों से व्याप्त भी | काचशकले | – काँच के टुकड़े में |
| न याति | – प्राप्त नहीं होता। | | |

## भावार्थ :

हे सर्वज्ञ देव! विश्व के समस्त तत्त्वों को जानने वाला आप जैसा केवलज्ञान अन्य देवों में नहीं पाया जाता है। सच है। महामणियों में पाये जाने वाला तेज काँच के टुकड़ो में नहीं पाया जाता है।

# संतान संपत्ति सौभाग्य प्रदायक

## भावानुवाद

जैसा ज्ञान आप में शोभे, सर्वजगत ज्ञाता ।
हरिहरादि देवों में वैसा, कभी नहीं भाता ।।
जैसा तेज महामणियों में, शोभा पाता है ।
वैसा किरणाकुलित काँच में, कभी न आता है ।।20।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः शत्रुभयनिवारणाय ठः ठः नमः स्वाहा।

ॐ नमो भगवते पुत्राय अर्थ सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रकाशितलोकालोक स्वरूपाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# अन्त में पाया सो ठीक है

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा-
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि।।21।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नाथ | – | हे स्वामिन्! | मन्ये | – | मैं मानता हूँ कि |
| दृष्टाः | – | देखे गये | हरिहरादयः एव | – | विष्णु महादेव आदि देव ही |
| वरम् | – | अच्छे हैं | येषु दृष्टेषु | – | जिनके देखे जाने पर |
| हृदयम् | – | मन | त्वयि | – | आपके विषय में |
| तोषम् | – | सन्तोष को | एति | – | प्राप्त हो जाता है |
| वीक्षितेन | – | देखे गये | भवता | – | आपसे |
| किम् | – | क्या लाभ है ? | येन भुवि | – | जिससे कि पृथ्वी पर |
| अन्यः कश्चित् | – | कोई दूसरा देव | भवान्तरे अपि | – | जन्मान्तर में भी |
| मनः | – | चित्त को | न हरति | – | नहीं हर सकता। |

## भावार्थ :

हे भगवन्! भला हुआ जो मैंने पहिले ही अहितकारी देवों को देख लिया बाद में परम हितकारी वीतरागी देव आपको देखकर मेरा मन आपमें ही लीन हो संतोष को प्राप्त हो गया अब तो कभी भी कहीं भी मेरा चित्त नहीं जायेगा। अर्थात् जिनदर्शन सर्व श्रेष्ठ आत्म कल्याणी दर्शन है।

# सर्व सौभाग्य प्रदायक

## भावानुवाद

भला हुआ जो मैंने पहिले, उनको देख लिया।
पीछे तुम्हें देखने पर ही, मन सन्तोष हुआ ।।
मेरा चित्त लुभाने वाला, कोई नहीं होगा ।
जिन दर्शन का लाभ मुझे बस, इतना तो होगा ।।21।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा ।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमः श्रीमणिभद्र जय विजय अपराजिते सर्वसौभाग्यं सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमो भगवते शत्रु भय निवारणाय नमः।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं सर्वदोषहरशुभदर्शनाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

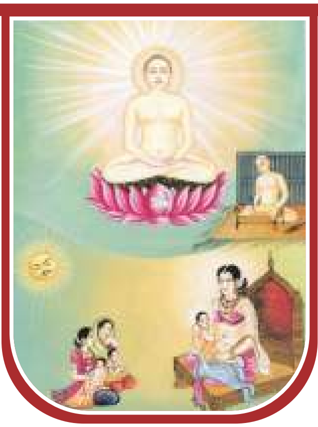

# आपकी माता धन्य है

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्त्ररश्मिं
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्।।22।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| शतानि | – सैकड़ों | स्त्रीणाम् | – स्त्रियाँ |
| शतशः पुत्रान् | – सैकड़ों पुत्रों को | जनयन्ति | – जन्म देती हैं, परन्तु |
| त्वत् उपमम् | – आप जैसे | सुतम् | – पुत्र को |
| अन्या जननी | – दूसरी माँ | न प्रसूता | – उत्पन्न नहीं कर सकी |
| भानि | – नक्षत्रों को | सर्वाः दिशः | – सभी दिशायें |
| दधति | – धारण करती हैं परन्तु | स्फुरत् | – दैदीप्यमान |
| अंशुजालम् | – किरणों के समूह वाले | सहस्त्ररश्मिम् | – सूर्य को |
| प्राचीदिक् एव | – पूर्व दिशा ही | जनयति | – प्रकट करती है। |

## भावार्थ :

हे भगवन्! सौ–सौ पुत्रों को जन्म देने वाली तो यहाँ सैकड़ों मातायें हैं। किन्तु आप जैसे त्रिभुवन कल्याणकारी पुत्र रत्न को जन्म देने वाली एक मात्र आपकी ही माता है सच है ताराओं को जन्म देने वाली सभी दिशाऐं है किन्तु सूर्य को जन्म देने वाली एक मात्र पूर्व दिशा की तरह धन्य है आपकी माता है।

# भूत पिशाच बाधा निरोधक

## भावानुवाद

शत शत नारी शत शत सुत को, जन्म दिया करती।
किन्तु आपकी माता जैसी, कौन कहाँ रहती ।।
सभी दिशायें ताराओं को, जन्म दिया करती ।
पूर्व दिशा ही एक मात्र जो, दिनकर को जनती ।।22।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ णमो वीरेहिंजृम्भय–जृम्भय मोहय–मोहय स्तम्भय–स्तम्भय अवधारणं कुरु कुरु स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं अद्भुतगुणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

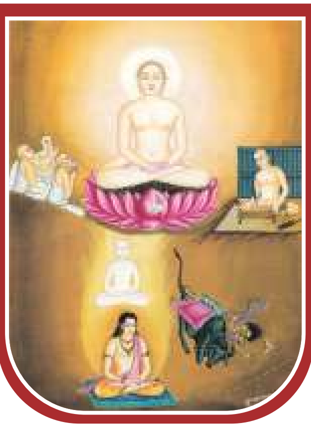

# मृत्युंजयी श्रेयस्पथ जिनदेव ही

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः।।23।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मुनीन्द्र! | – | हे मुनियों के नाथ! | मुनयः | – | मुनिजन |
| त्वाम् | – | आपको | आदित्यवर्णम् | – | सूर्य की तरह तेजस्वी |
| अमलम् | – | निर्मल | तमसः पुरस्तात् | – | मोहान्धकार से परे रहने वाले |
| परमं पुमांसम् | – | परम पुरुष | आमनन्ति | – | मानते हैं, वह |
| त्वाम् एव | – | आपको ही | सम्यक् | – | अच्छी तरह |
| उपलभ्य | – | प्राप्त कर | मृत्युम् | – | मृत्यु को |
| जयन्ति | – | जीतते हैं, इसके अलावा | | | |
| शिवपदस्य | – | मोक्षपद का | अन्यः | – | दूसरा |
| शिवःपन्थाः | – | कल्याणकारी रास्ता | न | – | नहीं है। |

## भावार्थ :

अहो मुनीश्वर! मुनिगण आपको तिमिर विनाशक! निर्मल दिनकर! एवं परम पुरुष परमात्मा मानते हैं तथा आपको भली भांति अपनाकर मृत्यु पर विजय पा लेते हैं। एवं आपके सिवा मोक्ष का कोई अन्य मार्ग भी नहीं है अतः आपकी शरण में आते हैं।

# शिरोरोग नाशक

## भावानुवाद

अहो मुनीश्वर! मुनिगण तुमको, ही ऐसा जाने ।
तिमिर विनाशक निर्मल दिनकर, परम पुरुष माने ।।
सम्यक् तरह आपको पाकर, मृत्युंजय पाते ।
तुम्हें छोड़ शिव पन्थ नहीं कुछ, अत: शरण आते ।।23।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं झ्रौं–झ्रौं नम: स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ णमो भगवती जयावती मम समीहितार्थंमोक्षसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्व सिद्धाय श्रीं नम:।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं मनोवांछितफलदायकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

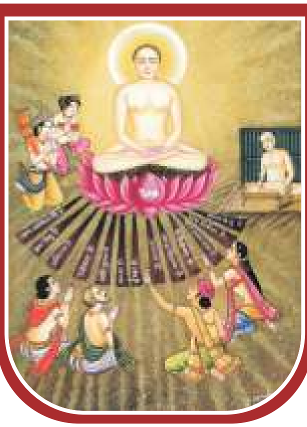

# विभिन्न नाम आपके ही

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्य-मसंख्यमाद्यं
ब्रह्माण - मीश्वर - मनंतमनङ्गकेतुम्।
योगीश्वर विदित-योग-मनेकमेकं
ज्ञानस्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः।।24।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| सन्तः | - सज्जन पुरुष | त्वाम् | - आपको |
| अव्ययम् | - अव्यय | विभुम् | - विभु |
| अचिन्त्यम् | - अचिन्त्य | असंख्यम् | - असंख्य |
| आद्यम् | - आद्य | ब्रह्माणम् | - ब्रह्मा |
| ईश्वरम् | - ईश्वर | अनन्तम् | - अनन्त |
| अनंगकेतुम् | - अनंगकेतु | योगीश्वरम् | - योगीश्वर |
| विदितयोगम् | - विदितयोग | अनेकम् | - अनेक |
| एकम् | - एक | ज्ञानस्वरूपम् | - ज्ञानस्वरूप और |
| अमलम् | - अमल | प्रवदन्ति | - कहते हैं। |

## भावार्थ :

हे गुणनाम प्रभु! सन्त पुरुष आपको अव्यय, विभु, अचिन्त्य, असंख्य, आद्य, ब्रह्मा, ईश्वर, अनंगकेतु, योगीश्वर, विदितयोग, एक, अनेक ज्ञान स्वरूप निर्मल परमात्मा आदि अनेक नामों से भजते हैं अतः आप यथानाम तथा गुणधारी है।

# बुद्धि-वृद्धि प्रदायक

## भावानुवाद

अव्यय तुम हो, विभु अचिन्त्य हो, हो असंख्य आदि ।
ब्रह्मा ईश्वर तुम अनंत हो, कामदेव आदि ॥
तुम योगीश्वर योग विशारद, एक अनेक लहें ।
ज्ञान स्वरूपी अमल जिनेश्वर, तुमको सन्त कहें ॥24॥

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** स्थावर जंगम वायकृतिमं सकलविषं यद्भक्तेः अप्रणमिताय ये दृष्टिविषान्मुनीन्ते वड्ढमाणस्वामी सर्वहितं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।
ॐ ह्रीं क्लीं सौं नमः ।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं सहस्रनामाधीश्वराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

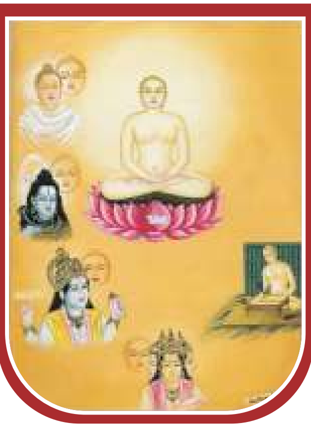

# ब्रह्मा, विष्णु, शंकर और बुद्ध आप ही

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धिबोधात्
त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रय-शङ्करत्वात्।
धातासि धीर! शिवमार्ग-विधेर्विधानाद्-
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि।।25।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| विबुधार्चित | – देवों के द्वारा पूजित | बुद्धिबोधात् | – ज्ञान वाले होने से |
| त्वम् एव | – आप ही | बुद्धः | – बुद्ध हैं |
| भुवनत्रय | – तीनों लोकों में | शङ्करत्वात् | – सुख शांति करने के कारण |
| त्वम् एव | – आप ही | शङ्करः असि | – शंकर हैं |
| धीर! | – हे धीर! | शिवमार्गविधेः | – मोक्षमार्ग की विधि के |
| विधानात् | – विधान करने से | त्वम् एव | – आप ही |
| धाता असि | – ब्रह्मा हैं, और | भगवन्! | – हे भगवान्! |
| त्वम् एव | – आप ही | व्यक्तम् | – स्पष्ट रूप से |
| पुरुषोत्तमः असि | – श्रेष्ठ पुरुष | विष्णु | – हैं। |

## भावार्थ :

हे जिन भगवन्/ देवों द्वारा पूजित, ज्ञान होने से तुम ही बुद्ध हो, तीन लोक में शान्ति को करने वाले होने से तुम ही शंकर हो, मोक्ष मार्ग की विधि को बताने वाले होने से तुम ही विधाता हो और प्रत्यक्ष रूप से तुम ही पुरुषोत्तम (विष्णु) हो।

# दृष्टि दोष निरोधक

## भावानुवाद

बुद्ध आप हो विबुधार्चित हो, बुद्धि बोध धारी ।
तुम्हीं हो शंकर, भुवनत्रय को, सम्यक् सुखकारी ।।
तुम्हीं विधाता मोक्षमार्ग की, विधि बतलाते हो ।
भगवन्! तुम ही पुरुषोत्तम हो, धैर्य दिलाते हो ।।25।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो भगवते जयविजयपराजिते सर्वसौभाग्यं सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं षड्दर्शनपारंगताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

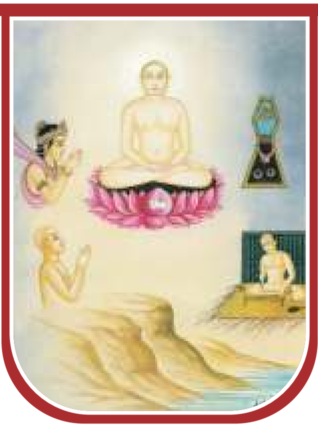

# आपको नमस्कार हो

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति–हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षिति–तलामल–भूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधिशोषणाय।।26।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाथ! | – हे स्वामिन् | त्रिभुवन | – तीनों लोकों के |
| अर्तिहराय | – दुःखों को हरने वाले | तुभ्यं नमः | – आपको नमस्कार हो |
| क्षितितल | – पृथ्वी तल के | अमलभूषणाय | – निर्मल आभूषण स्वरूप |
| तुभ्यं नमः | – आपको नमस्कार हो | त्रिजगतः | – तीनों जगत के |
| परमेश्वराय | – परमेश्वर स्वरूप | तुभ्यं नमः | – आपके लिये नमस्कार हो और |
| जिन! | – हे जिनेन्द्र! | भवोदधि | – भवसागर के |
| शोषणाय | – सुखाने वाले | तुभ्यं नमः | – आपको नमस्कार हो। |

## भावार्थ :

हे प्रभु! तीन लोक के दुःखों को हरने वाले, पृथ्वीतल के निर्मल आभूषण, त्रिभुवन के परमात्मा और भव सागर को सुखाने वाले हे जिनेन्द्र देव आपके लिए नमस्कार हो, नमस्कार हो, नमस्कार हो।

# अर्द्ध शिर पीड़ा विनाशक

## भावानुवाद

भुवनत्रय के दुखहर्ता जिन! तुम्हें नमन मेरा ।
भूमण्डल के आभूषण जिन! तुम्हें नमन मेरा ।।
तीन लोक के परमेश्वर हो, तुम्हें नमन मेरा ।
भव सागर के शोषण कर्ता, तुम्हें नमन मेरा ।।26।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं झ्रौं–झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं हूँ हूँ परजनशान्तिव्यवहारे जयं कुरु कुरु स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं नानादुः खविलीनाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

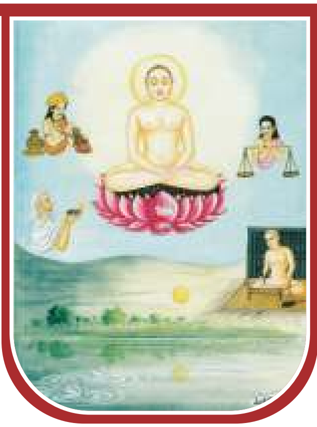

# दोष रहित गुणों के स्वामी

को विस्मयोऽत्र यदि नाम-गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश।
दोषैरुपात्त - विविधाश्रय - जातगर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि।।27।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| मुनीश! | – हे मुनियों के स्वामी! | यदि नाम | – यदि |
| त्वम् | – आप | निरवकाशतया | – अन्य जगह न मिलने के कारण |
| अशेषैः | – समस्त | गुणैः | – गुणों के द्वारा |
| संश्रितः | – आश्रित हुये हो और | उपात्त | – प्राप्त हुये |
| विविधाश्रय | – अनेक आधार से | जातगर्वैः | – उत्पन्न हुआ है अहंकार जिनको ऐसे |
| दोषैः | – दोषों के द्वारा | स्वप्नान्तरे अपि | – स्वप्न में भी |
| कदाचित् अपि | – कभी भी | न ईक्षितः असि | – नहीं देखे गये हो |
| तर्हि | – तो | अत्र | – इस विषय में |
| कः विस्मयः | – क्या आश्चर्य है! अर्थात् कुछ नहीं। | | |

## भावार्थ :

हे मुनीश्वर! यदि, गुणों को आप के सिवा अन्य आश्रय न मिलने से सभी गुण आप में समा गये और दोषों को अनेक आश्रय मिलने से गर्वित हो आपकी ओर स्वप्न में भी नहीं देखे गये तो इसमें क्या आश्चर्य? सच ही है गुणवानों की शरण में आकर गुण ही गुण रहते हैं दोष नहीं।

# शत्रु उन्मूलक

## भावानुवाद

**सर्व गुणों ने तेरा आश्रय, अरे भला लीना ।**
**दोषों ने गर्वित होकर के, अन्य शरण लीना ।।**
**दोष वहाँ जाकर के मिलते, जहाँ दोष रहते ।**
**गुणवानों की शरण में आकर, गुण ही गुण रहते ।।27।।**

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी चक्रेणानुकूलं साधयसाधय शत्रूनुन्मूलय उन्मूलय स्वाहा।

ॐ नमो भगवते सर्वार्थ सिद्धाय सुखाय ह्रीं श्रीं नमः।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं सकलदोषनिर्मुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# अशोक वृक्ष प्रातिहार्य

उच्चै-रशोकतरु-संश्रित-मुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्किरण-मस्ततमो-वितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति।।28।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| उच्चै | - ऊँचे | अशोकतरु | - अशोक वृक्ष के |
| संश्रितम् | - नीचे स्थित तथा | उन्मयूखम् | - जिसकी किरणें ऊपर को फैल रही हैं ऐसा |
| भवतः | - आपका | अमलम् रूपम् | - उज्ज्वल रूप |
| स्पष्ट | - स्पष्ट रूप से | उल्लसत् | - शोभायमान हैं |
| किरणम् | - किरणें जिसकी और | अस्त | - नष्ट कर दिया है |
| तमोवितानम् | - अन्धकार का विस्तार जिसने ऐसे | | |
| पयोधर | - मेघ के | पार्श्ववर्ति | - पास में स्थित |
| रवेः | - सूर्य के | बिम्बम् इव | - बिम्ब की तरह |
| नितान्तम् | - अत्यन्त | आभाति | - शोभित होता है। |

## भावार्थ :

हे भगवन्! उच्च अशोक वृक्ष की छाँव तले विराजमान, अपनी उज्ज्वल रूप रश्मियों को ऊपर की आरे फैलाता हुआ आपका परमौदारिक तन अत्यंत शोभायमान हो ऐसा लग रहा मानो बादलों के समीप चमकता सूर्य मण्डल ही हो।

# सर्व मनोरथ पूरक

## भावानुवाद

**परमौदारिक तन से प्रभु के, निकल रही आभा ।**
**नीचे रहकर ऊपर तरु की, बढ़ा रही शोभा ।।**
**सूर्य बिम्ब ज्यों निज किरणों को, ऊपर फैलाता ।**
**सघन बादलों में घिर कर भी, शोभा ही पाता ।।28।।**

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो भगवते जयविजय जृंभय-जृंभय मोहय-मोहय सर्वसिद्धि सम्पत्ति सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं अशोकतरुविराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# सिंहासन प्रातिहार्य

सिंहासने मणिमयूख-शिखाविचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्विलसदंशु-लतावितानं
तुङ्गोदयाद्रि-शिरसीव सहस्त्ररश्मेः।।29।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| मणिमयूख | – रत्नों की किरणों के | शिखाविचित्रे | – अग्रभाग से चित्र-विचित्र |
| सिंहासने | – सिंहासन पर | तव | – आपका |
| कनकावदातम् | – स्वर्ण की तरह उज्ज्वल | वपुः | – शरीर |
| तुङ्गोदयाद्रि | – ऊँचे उदयाचल की | शिरसि | – शिखर पर |
| वियद्-विलसद् | – आकाश में शोभायमान है | | |
| अंशुलतावितानाम् | – किरणरूपी लताओं का समूह जिसके ऐसे, | | |
| सहस्त्ररश्मेः | – सूर्य के | बिम्बम् इव | – बिम्ब की तरह |
| विभ्राजते | – शोभायमान हो रहा है। | | |

## भावार्थ :

हे जिनेन्द्र! रत्नों से जड़ित सिंहासन पर, स्वर्ग समान कांतिवाला आपका शरीर ऐसा शोभायमान हो रहा है मानो उदयाचल पर सूर्य का उदय हो रहा हो।

# नेत्र पीड़ा विनाशक

## भावानुवाद

रत्न जड़ित सिंहासन सोहे, उस पर प्रभु काया ।
उदयाचल की चोटी पर ज्यों, बाल भानु आया ।।
वीतराग भावों का वर्द्धक, दृश्य अनौखा है ।
दुर्लभ दर्शन सुलभ हुआ, यह बढ़िया मौका है ।।29।।

- **ऋद्धि मंत्र:** ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
- **जाप्य मंत्र:** ॐ ह्रीं णमिऊण पासं विसहरफुलिंगमंतो विसहरनाम रकार सर्वसिद्धिमीहे इह समेरेताणं मण्णे जागई कप्प दुमचचं सर्वसिद्धिः ॐ नमः स्वाहा।
- **दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं मणिमुक्ताखचितसिंहासनप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

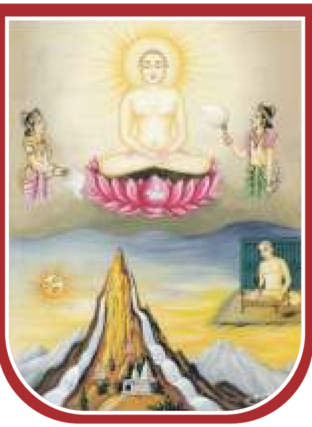

# चँवर प्रातिहार्य

कुन्दावात–चल–चामर–चारुशोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम्।
उद्यच्छशाङ्कशुचि–निर्झर–वारिधार–
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्।।30।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| कुन्दावदात | – कुन्द पुष्प के समान निर्मल श्वेत | | |
| चल चामर | – हिलते हुये चामरों की | चारुशोभम् | – सुन्दर शोभा से युक्त |
| कलधौत | – स्वर्ण के समान | कान्तम् | – कान्तिवाला |
| तव वपुः | – आपका शरीर | उद्यच्छशाङ्क | – उदीयमान चन्द्रमा के समान |
| शुचि–निर्झर | – निर्मल झरनों की | वारिधारम् | – जलधारा से युक्त |
| सुरगिरेः | – सुमेरु पर्वत के | शातकौम्भम् | – स्वर्णमयी |
| उच्चैस्तटम् इव | – ऊँचे तट के समान | विभ्राजते | – शोभायमान होता है। |

## भावार्थ :

हे प्रभो! कुन्द पुष्प के समान धवल ढुरते हुए चमरों की सुन्दर शोभा से सहित स्वर्ण समान कांति वाला आपका शरीर ऐसा लगता है मानो सुमेरु पर्वत के तट पर निर्मल जल का झरना ही झर रहा हो।

# शत्रु स्तंभक

## भावानुवाद

कुन्द पुष्प सम रजत मनोहर, चारु चमर चलते।
कुन्दन सम काया वाले प्रभु! तुम पर यूँ लगते ।।
ज्यों चंदा से अरे चाँदनी, झर–झर के आयी ।
गिरि सुमेरु के दोनों तट पर, यह महिमा छाई ।।30।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ णमो अट्ठे मट्ठे क्षुद्रान् स्तंभय–स्तम्भय रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं चतुः षष्टिचामरप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# छत्रत्रय प्रातिहार्य

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककान्त–
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम्।
मुक्ताफल – प्रकर – जालविवृद्धशोभं
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्।।31।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| शशांककान्तम् | – चन्द्रमा के समान सुन्दर | भानुकरप्रतापम् | – सूर्य की किरणों के सन्ताप को |
| स्थगित | – रोकने वाले तथा | मुक्ताफल | – मोतियों के |
| प्रकरजाल | – समूह वाली झालर से | विवृद्धशोभम् | – बढ़ रही है शोभा जिनकी ऐसे |
| तव | – आपके | उच्चैः स्थितम् | – ऊपर स्थित |
| छत्रत्रयम् | – तीन छत्र | त्रिजगतः | – तीन जगत के |
| परमेश्वरत्वम् | – स्वामित्व को | प्रख्यापयत् | – प्रकट करते हुये |
| विभाति | – शोभायमान होते हैं। | | |

## भावार्थ :

हे भगवन्! आपके मस्तक ऊपर चन्द्रकांति वाले, सूर्य के प्रताप को रोकने वाले, मोतियों की सुन्दर झालरों से शोभा को बढ़ा रहे तीन छत्र, मानो यह प्रकट कर रहे हैं कि आप तीन लोक के ईश्वर हो।

# राज्य सम्मान दायक

## भावानुवाद

**तीन छत्र शोभित हैं सिर पर, चन्द्रप्रभा धारी ।**
**सहज समर्पित सेवक सम वह, भानुताप हारी ।।**
**और मोतियों की झालर भी, क्या शोभा लाये ।**
**लोकत्रय के परमेश्वर हो, कहने को आये ।।31।।**

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुण परक्कमाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ उपसग्गहरं पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं विसहर विसणिर्णासिणं मंगलकल्लाणं आवासं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# देव-दुन्दुभि प्रातिहार्य

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूतिदक्षः।
सद्धर्मराज-जय-घोषण-घोषकः सन्
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ।।32।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गम्भीर | – | गम्भीर और | ताररवपूरित | – | उच्च शब्द से पूर दिया है |
| दिग्विभागः | – | दिशाओं के विभाग को जिसने ऐसा | | | |
| त्रैलोक्य | – | तीनों लोकों के | लोक | – | जीवों को |
| शुभसंगम | – | शुभ समागम की | भूतिदक्षः | – | सम्पत्ति देने में समर्थ और |
| सद्धर्मराज | – | तीर्थंकर देव की | जयघोषण | – | जयघोषणा को |
| घोषकः | – | घोषित करने वाला | दुन्दुभिः | – | दुन्दुभि (बाजा) |
| ते यशसः | – | आपके यश का | प्रवादी सन् | – | कथन करता हुआ |
| खे ध्वनति | – | आकाश में शब्द करता है। | | | |

## भावार्थ :

हे भगवन्! गम्भीर उच्च मधुर शब्दों से दिशाओं विदिशाओं को पूर्ण करता हुआ, तीन लोक के जीवों को शुभ समाचार रूपी सम्पदा देने में कुशल और तीर्थंकर भगवान का जयनाद करता हुआ दुन्दुभि प्रातिहार्य आपका धवल यशोगान गा रहा है।

# ग्रहण संहारक

## भावानुवाद

**मधुर–मधुर ॐ चे स्वर वाली, दुन्दुभियाँ गूँजें।**
**शुभ संगम के समाचार से, सर्व दिशा पूँजें।।**
**तीर्थंकर की जय–जय–जय हो, उद्घोषण करती।**
**नभमण्डल में तेरे यश को, दुन्दुभियाँ भरती ।।32।।**

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुण बंभयारीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वदोष निवारणं कुरु कुरु स्वाहा। – सर्व सिद्धिं वृद्धिं वांछां कुरु कुरु स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं त्रैलोक्याज्ञाविधायिने क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

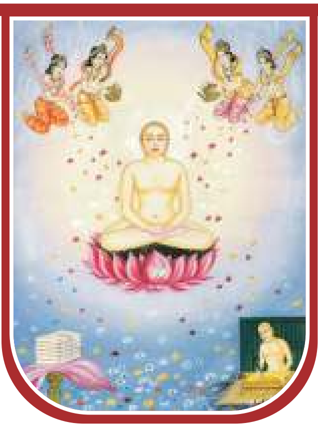

# पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य

मन्दार– सुन्दर – नमेरु – सुपारिजात–
सन्तानकादि – कुसुमोत्कर वृष्टिरुद्धा।
गंधोदबिंदु शुभमन्द – मरुत्प्रपाता
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा।।33।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गन्धोदबिन्दु | – | सुगन्धित जल की बूँदों और | | | |
| शुभमन्दमरुत् | – | सुखकर मन्द पवन के साथ | | | |
| प्रपाता | – | गिरने वाली | उद्धा | – | श्रेष्ठ और |
| दिव्या | – | मनोहर | मन्दार | – | मन्दार |
| सुन्दर | – | सुन्दर | नमेरु | – | नमेरु |
| सुपारिजात | – | पारिजात | सन्तानकादि | – | सन्तानक आदि |
| कुसुमोत्कर | – | कल्पवृक्षों के फूलों की | वृष्टिः | – | वर्षा |
| ते वचसाम् | – | आपके वचनों की | ततिः वा | – | पंक्ति की तरह |
| दिवः | – | आकाश से | पतति | – | पड़ती है। |

## भावार्थ :

हे नाथ! सुगन्धित जल और मन्द पवन के साथ आकाश से जो कल्पवृक्ष के पुष्पों की वर्षा होती है वह ऐसी लगती है मानो आपके श्री मुख से दिव्य वचनों की पंक्ति ही झर रही हो।

# सर्व ज्वर संहारक

## भावानुवाद

तीर्थंकर का पुण्य निराला, महिमा कौन कहे ।
गंधोदक की वर्षा होती, मन्द वयार बहे ।।
समवशरण में दिव्य मनोहर, सुन्दर सुमन गिरे।
ऐसे लगते पंक्तिबद्ध ज्यों, जिनवर वचन खिरे ।।33।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ध्यान सिद्धिं परम योगीश्वराय नमो नमः स्वाहा।

: ॐ क्लीं ।।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं समस्तपुष्पजातिवृष्टिप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

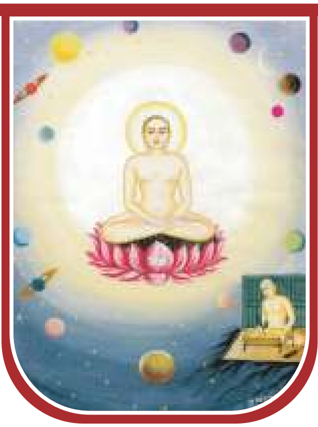

# भामण्डल प्रातिहार्य

शुम्भत्प्रभावलय - भूरिविभा विभोस्ते
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्दिवाकर - निरन्तर - भूरि - संख्या-
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम्।।34।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| लोकत्रये | – तीनों लोकों में | द्युतिमताम् | – सभी कान्तिमान पदार्थों की |
| द्युतिम् | – कान्ति को | आक्षिपन्ती | – तिरस्कृत करने वाली |
| प्रोद्यद्दिवाकर | – उदित होते हुये सूर्यों की | निरन्तर | – निरन्तर |
| भूरि संख्या | – भारी संख्या वाली | दीप्त्या अपि | – दीप्ति से भी और |
| सोमसौम्या | – चन्द्रमा के समान सुन्दर | विभोः | – हे प्रभो! |
| ते | – आपके | शुम्भत् | – दैदीप्यमान |
| प्रभावलय | – भामण्डल की | भूरिविभा | – अत्यधिक कान्ति |
| निशाम् अपि | – रात्रि को भी | जयति | – जीत रही है। |

## भावार्थ :

हे नाथ! आपके भामण्डल की प्रभा सहस्रों सूर्यों की प्रभा से अधिक होने पर भी किसी को सन्ताप देने वाली नहीं है बल्कि चन्द्रप्रभा की तरह शीतलता प्रदान करती है।

# गर्भ संरक्षक

## भावानुवाद

प्रभो! आपके प्रभा वलय से, भामण्डल चमके।
सूर्य बिम्ब से भी तेजस्वी, दम–दम–दम दमके।।
इसके सम्मुख लोकत्रय के, सब पदार्थ फीके ।
सूरज चन्दा एक साथ हैं, लगे बहुत नीके ।।34।।

ऋद्धि मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ नमो ह्रीं क्लीं ऐं ह्रौं पद्मावत्यै देव्यै नमो नमः स्वाहा।
ॐ प च य म ह्रां ह्रीं नमः।

दीप मंत्र : ॐ ह्रीं कोटिभास्कर प्रभामण्डितभामण्डलप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

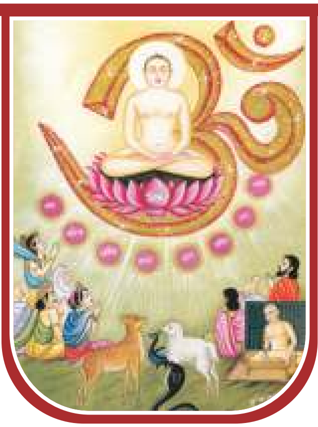

# दिव्यध्वनि प्रातिहार्य

स्वर्गापवर्ग – गममार्ग – विमार्गणेष्टः
सद्धर्मतत्त्व – कथनैक – पटुस्त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनि–र्भवति ते विशदार्थ–सर्व–
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः।।35।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| ते | – आपकी | दिव्यध्वनिः | – दिव्यध्वनि |
| स्वर्गापवर्ग | – स्वर्ग और मोक्ष को | गममार्ग | – जाने वाले मार्ग के |
| विमार्गणेष्टः | – खोजने के लिये इष्ट | त्रिलोक्याः | – तीनों लोक के जीवों को |
| सद्धर्मतत्त्व | – समीचीन धर्मतत्त्व के | कथनैकपटुः | – कथन करने में अत्यंत समर्थ |
| विशदार्थ | – स्पष्ट अर्थ वाली | सर्वभाषा | – सभी भाषाओं में |
| स्वभावपरिणाम | – परिणत होने वाले स्वाभाविक | | |
| गुणैः | – गुण से | प्रयोज्यः | – सहित |
| भवति | – होती है। | | |

## भावार्थ :

हे तीर्थंकर देव! आपकी दिव्यध्वनि स्वर्ग और मोक्ष का मार्ग बताने वाली है, सच्चे धर्मतत्त्व का कथन करने में समर्थ और सर्व भाषाओं में परिणमन करने रूप गुण से सहित है।

# ईति-भीति निवारक

## भावानुवाद

मोक्षमार्ग दरशाने वाली, दिव्यध्वनि तेरी ।
सत्य धर्म बतलाने वाली, दिव्य ध्वनि तेरी ।।
विश्व हितैषी विशद अर्थमय, दिव्यध्वनि तेरी ।
सर्व समझ में आने वाली, दिव्यध्वनि तेरी ।।35।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो जय विजयापराजिते महालक्ष्मी अमृतवर्षिणी अमृतं स्राविणी अमृतं भव भव वषट् सुधायै स्वाहा।

**आराधना :** ॐ नमो गज गमने सर्व कल्याण मूर्ते रक्ष रक्ष नमः स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं जलधरपटलगर्जितसर्वभाषात्मकयोजनप्रमाण दिव्य ध्वनिप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

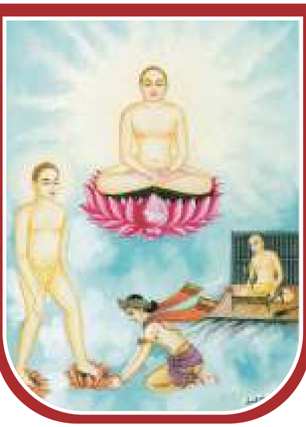

# विहार में स्वर्ण कमलों की रचना

उन्निद्र - हेमनव - पंकज - पुञ्जकान्ति
पर्युल्लसन्नख - मयूख - शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति।।36।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जिनेन्द्र | - | हे जिनेन्द्र देव! | उन्निद्रहेम | - | खिले हुये स्वर्ण के |
| नव पंकज | - | नवीन कमल | पुञ्जकान्ति | - | समूह के समान कान्ति के द्वारा |
| पर्युल्लसन् | - | सब ओर से शोभायमान | नखमयूख | - | नखों की किरणों के |
| शिखाभिरामौ | - | अग्रभाग से सुन्दर | तव पादौ | - | आपके चरण |
| यत्र | - | जहाँ | पदानि धत्तः | - | चरण रखते हैं |
| तत्र | - | वहाँ | विबुधाः | - | देव |
| पद्मानि | - | कमल | परिकल्पयन्ति | - | रच देते हैं। |

## भावार्थ :

हे तीर्थंकर प्रभु! जब आप नभ मण्डल में पद विहार करते हैं तब देवगण आपके चरण तले स्वर्णमयी कमलों की रचना करते हैं।

# लक्ष्मी प्रदायक

## भावानुवाद

नूतन स्वर्ण कमल सम सुंदर, चरण कमल तेरे।
नख से निकली कांति मनोहर, बन चरित्र चेरे ।।
जहाँ–जहाँ पद धरते प्रभु के, वहाँ–वहाँ देखो।
सुरगण स्वर्ण कमल रचते हैं, भक्ति भाव लेखो ।।36।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठोसहित्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ ह्रीं कलिकुण्डदण्डस्वामिन आगच्छ आगच्छ आत्ममंत्रान् आकर्षय आत्ममन्त्रान् रक्ष रक्ष परमन्त्रान् छिंद–छिंद मम समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

**आराधना :** ॐ नमो भगवते अप्रतिचक्रे ऐं क्लीं ब्लूं।
ॐ ह्रीं मनोवांछित सिध्द्यै नमोः नमः अप्रतिचक्रे ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं पादन्यासे पद्मश्रीयुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामः स्वाहा।

# आप जैसी विभूति अन्यों में नहीं

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र!
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा
तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि।।37।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| जिनेन्द्र | – हे जिनेन्द्र! | इत्थं | – इस प्रकार |
| धर्मोपदेशनविधौ | – धर्मोपदेश के विषय में | यथा | – जैसी |
| तव विभूतिः | – आपकी विभूति | अभूत् | – हुई थी |
| तथा | – वैसी | परस्य | – किसी दूसरे की |
| न अभूत् | – नहीं हुई थी | प्रहतान्धकार | – अन्धकार को नष्ट करने वाली |
| यादृक् प्रभा | – जैसी कान्ति | दिनकृतः भवति | – सूर्य की होती है |
| तादृक् | – वैसी | विकासिनः अपि | – चमकते हुये भी |
| ग्रहगणस्य | – अन्य ग्रहों की | कुतः | – कहाँ से हो सकती है? |

## भावार्थ :

हे तीर्थपति! दिव्य ध्वनि की बेला में जैसी समवशरणादि रूप विभूति आपको प्राप्त हुई थी वैसी विभूति अन्य देवों को नहीं। सच है सूर्य जैसी कांति टिमटिमाते ताराओं में नहीं होती।

# दुष्टता प्रतिशोधक

## भावानुवाद

दिव्यध्वनि की उस बेला में, जो वैभव जैसा।
अन्य कहीं भी ना देखा है, जिनवर तुम जैसा ।।
जैसी दीप्ति दिवाकर में है, गहन तिमिर हारी ।
वैसी क्या तारामण्डल में, है प्रकाशकारी ।।37।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ णमो भगवते अप्रतिचक्रे ऐं क्लीं ब्लूं ॐ ह्रीं मनोवांछित सिद्धयै नमो नमः अप्रतिचक्रे ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

**आराधना :** ॐ श्रीं ह्रीं क्रौं झ्रौं।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं धर्मोपदेशसमये समवशरणादि लक्ष्मीविभूतिविराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

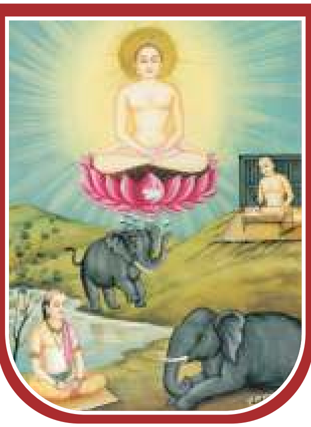

# हस्तिभय निवारक भक्ति

श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोलमूल-
मत्तभ्रमद् - भ्रमरनाद - विवृद्धकोपम्।
ऐरावताभमिभ - मुद्धत - मापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्।।38।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| भवदाश्रितानाम् | – आपके आश्रित जनों को | श्च्योतन् | – झरते हुये |
| मदाविलविलोल | – मद–जल से मलिन और चंचल | | |
| कपोलमूल | – गण्डस्थल पर | मत्तभ्रमद् | – मस्ती में घूमते हुए |
| भ्रमर नाद | – भौंरों के गुञ्जार से | विवृद्धकोपम्! | – बढ़ गया है क्रोध जिसका ऐसे |
| ऐरावताभम् | – ऐरावत की तरह | उद्धतम् | – उद्दण्ड |
| आपतन्तम् | – सामने आते हुये | इभम् | – हाथी को |
| दृष्ट्वा | – देखकर भी | भयम् | – डर |
| नो भवति | – नहीं होता। | | |

## भावार्थ :

हे भगवन्! ऐरावत हाथी के समान विशाल मदमत्त हाथी भी यदि आक्रमण करे तो भी आपके आश्रय में रहने वाले भक्त जनों को कुछ भी भय नहीं रहता।

# हस्तिमदभंजक

## भावानुवाद

मद के झरने झर–झर झरते, गोल कपोलों लौं।
जिसपर भौंरे हों मड़राते, गुन–गुन कर तोलौं ।।
क्रोधासक्त हुआ यों हाथी, जब सम्मुख आवे ।
उसे देखकर भक्त आपका, कभी ना घबरावे ।।38।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणोबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो भगवते महानागकुलोच्चाटिनी कालद्र द्रष्ट मृतकोत्थापिनी परमन्त्रप्रणाशिनी देविशासनदेवते ह्रीं नमो नमः स्वाहा।

**आराधना :** ॐ नमो नमः स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं हस्त्यादिगर्वदुद्धरभयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# सिंहभय-मुक्त जिनेन्द्र-भक्त

भिन्नेभ–कुम्भगलदुज्ज्वल–शोणिताक्त –
मुक्ताफल – प्रकर – भूषित – भूमिभागः।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचल–संश्रितं ते।।39।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| भिन्नेभ | – विदारे हुये हाथी के | कुम्भगलद् | – गण्डस्थल से झरते हुये |
| उज्ज्वल | – उज्ज्वल तथा | शोणिताक्त | – खून से भीगे हुये |
| मुक्ताफल | – मोतियों के | प्रकर भूषित | – समूह के द्वारा भूषित किया है |
| भूमिभागः | – भूमि का भाग जिसने ऐसा | बद्धक्रमः | – छलांग मारने के लिये तैयार |
| हरिणाधिपः अपि | – सिंह भी | क्रमगतम् | – अपने पाँव के बीच आते हुये |
| ते | – आपके | क्रमयुगाचल | – चरण युगल रूप पर्वत का |
| संश्रितम् | – आश्रय लेने वाले पुरुष पर | न आक्रामति | – आक्रमण नहीं करता। |

## भावार्थ :

हे भगवन्! आपके चरण युगल रूपी पर्वत का सहारा लेने वाले भक्त पर सिंह भी आक्रमण नहीं करता।

संस्मरण–गणेश प्रसाद वर्णी के पिता ने णमोकार मन्त्र स्मरण किया कि सामने आते हुए शेर ने रास्ता बदल लिया। आ. शांतिसागर के ध्यान काल में शेर आकर सामने बैठा रहा चला गया। आ. भूतवली के पद विहार में शेर सामने आया, बैठा, चला गया।

# सिंह शक्ति संहारक

## भावानुवाद

जिसने चीरे नाखूनों से, गजदल बड़े-बड़े ।
ऐसे सिंह के पंजों में यदि, तेरा भक्त पड़े ।।
निशंक निर्भय जिन पद का ही, आश्रय लिये रहे ।
क्रूर सिंह भी तभी शांत हो, आसन दिया करे ।।39।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचोवलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ णमो एषु वृत्तेषु वर्द्धमान तव भयहरणं वृत्तिवर्णायेषु मन्त्राः पुनः स्मर्तव्या अतोना परमन्त्रनिवेदनाय नमः स्वाहा।

**आराधना :** ॐ नमो भगवते भय विध्वंस ह्रां ह्रीं क्षौं श्रीं।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं युगादिदेवनामप्रसादात् केशरिभयविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

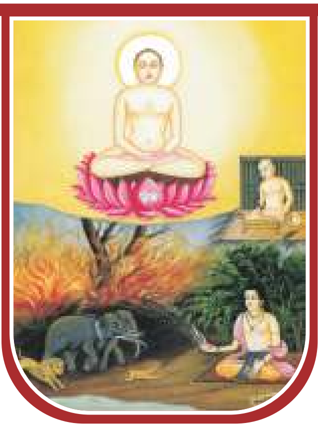

# नाम स्मरण से दावाग्नि

कल्पान्तकाल–पवनोद्धत–वह्निकल्पं
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं
त्वन्नामकीर्तन–जलं शमयत्यशेषम्।।40।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कल्पान्तकाल | – | प्रलय काल के | पवनोद्धत | – | पवन से उद्धत |
| वह्निकल्पम् | – | अग्नि के सदृश | ज्वलितम् | – | प्रज्ज्वलित |
| उज्ज्वलम् | – | उज्ज्वल और | उत्स्फुलिंगम् | – | ऊपर को तिलंगे फैंकती हुई |
| इव | – | मानो | विश्वम् | – | समस्त संसार को |
| जिघत्सुम् | – | भक्षण करने की इच्छा रखने वाले की तरह, | | | |
| सम्मुखम् | – | सामने | आपतन्तम् | – | आती हुई |
| दावानलम् | – | वन की अग्नि को | | | |
| त्वन्नामकीर्तनजलम् | – | आपके नाम का यशोगान रूप जल | | | |
| अशेषम् | – | पूर्ण रूप से | शमयति | – | शान्त कर देता है। |

## भावार्थ :

हे भगवन्! सम्पूर्ण विश्व को जलाने में समर्थ दावानल भी आपके नाम रूपी कीर्तन जल से शांत हो जाता है।

# सर्वाग्निशामक

## भावानुवाद

धधक रहीं ज्वालायें दिसमें, दावानल ऐसा ।
तेज फुलिंगें निकल रही हों, यम के मुख जैसा ।।
मानो विश्व निगलने आयी, जो अग्नि ज्वाला ।
नाम मंत्र के जल सिंचन से, बने शांति-शाला ।।40।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां ह्रीं अग्निमुपशमनं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

**आराधना :** ॐ सौं ह्रीं क्रौं ग्लौं सुन्दर रूपाय नमः।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं संसाराग्नितापनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

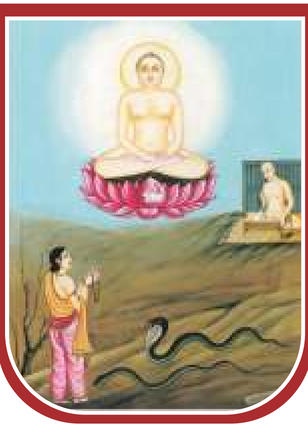

# भुजंग भयहारी नाम नागदमनी

रक्तेक्षणं समदकोकिल-कण्ठनीलं
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-मापतन्तम्
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्तशंक-
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः।।41।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यस्य पुंस | – | जिस पुरुष के | हृदि | – | हृदय में |
| त्वन्नाम | – | आपके के नामरूपी | नागदमनी | – | नागदौन औषध विद्यमान है, वह |
| रक्तेक्षणम् | – | लाल नेत्रों वाले | समदकोकिल | – | मदयुक्त कोयल के |
| कण्ठनीलम् | – | कण्ठ के समान काले | क्रोधोद्धतम् | – | क्रोध से उद्दण्ड और |
| उत्फणम् | – | ऊपर को फन उठाये हुये | आपतन्तम् | – | सामने आने वाले |
| फणिनम् | – | साँप को | निरस्तशंकः | – | शंका रहित होकर |
| क्रमयुगेण | – | दोनों पैरों से | आक्रामति | – | लाँघ जाता है। |

## भावार्थ :

हे भगवन्! जिस भक्त पुरुष के हृदय में आपके नाम रूपी नागदमनियाँ है वह भयंकर काले नाग को भी निर्भयता से लाँघ जाता है अर्थात् बड़ी-बड़ी विपदाओं को जीत लेता है।

# भुजंग भय भंजक

## भावानुवाद

ऊपर को फण उठा रहा हो, लाल नयन वाला।
क्रोधित होकर डसने आये, नागराज काला ।।
आदि नाम की नाम दमनियाँ, भक्त हृदय राखे ।
हो निःशंक वह नागराज को, भक्त शीघ्र लाँघें ।।41।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जलदेविकमले पद्महृदनिवासिनी पद्मोपरिसंस्थिते सिद्धिं देहि मनोवांछितं कुरु कुरु स्वाहा।

**आराधना :** ॐ ह्रीं आदिदेवाय ह्रीं नमः।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं त्वन्नामनागदमनीशक्तिसम्पन्नाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

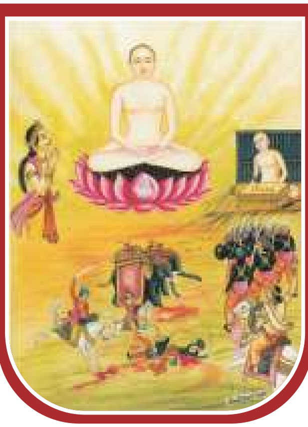

# संग्रामभय विनाशक जिनकीर्तन

वल्गत्तुरंग–गजगर्जित–भीमनाद–
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकर–मयूख–शिखापविद्धं
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति।।42।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| त्वत्कीर्तनात् | – आपके स्तवन से | आजौ | – युद्ध क्षेत्र में |
| वल्गत्तुरंग | – उछलते हुये घोड़े और | गजगर्जित | – हाथियों की गर्जना से |
| भीमनादम् | – भयंकर है शब्द जिसमें ऐसी | बलवताम् | – पराक्रमी |
| भूपतीनाम् अपि | – राजाओं की भी | बलम् | – सेना |
| उद्यदिवाकर | – उगते हुये सूर्य की | मयूखशिखा | –किरणों के अग्रभाग से |
| अपविद्धम् | – बांधे गये/नष्ट हुये | तमः इव | – अन्धकार की तरह |
| आशु | – शीघ्र ही | भिदाम् | – विनाश को |
| अपैति | – प्राप्त हो जाती है। | | |

## भावार्थ :

हे नाथ! जिस तरह सूर्य की किरणों से अन्धकार नष्ट हो जाता हैं। उसी तरह आपका नाम लेते ही बड़े–बड़े शत्रुओं की बलशाली सेनायें भी युद्ध में नष्ट हो जाती हैं। अथवा भाग जाती हैं।

# युद्ध भय विनाशक

## भावानुवाद

रण भूमि में रण के घोड़े, ऊपर उछल रहे ।
गज चिंघाड़ें शत्रु पक्ष के, सैनिक सबल रहे ।।
नाम सुमरते तितर-वितर हों, शत्रु सैन्य रण में।
जैसे सूर्योदय होते ही, अंधकार क्षण में ।।42।।

**ऋद्धि मंत्र** : ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र** : ॐ नमो णमिऊण विषधर विषप्रणाशन रोगशोकदोषग्रह कप्पद्रुमच्चजायई सुहनामग्रहणसकलसुहदे ॐ नमः स्वाहा।

**आराधना** : ॐ ह्रीं श्रीं बल पराक्रमाय नमः।

**दीप मंत्र** : ॐ ह्रीं संग्राममध्ये क्षेमंकराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

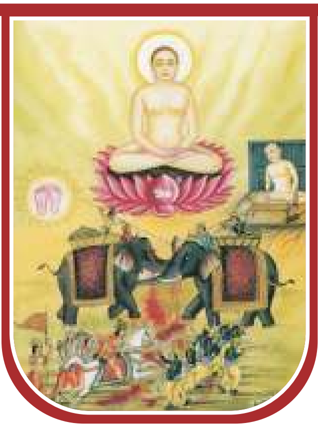

# शरणागत की युद्ध में विजय

कुन्ताग्र–भिन्नगज–शोणित–वारिवाह–
वेगावतार – तरणातुर – योधभीमे।
युद्धे जयं विजितदुर्जय – जेयपक्षा–
स्त्वत्पादपंकज–वनाश्रयिणो लभन्ते।।43।।

## अन्वयार्थ :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्वत्पादपंकज | – | आपके चरण रूप कमलों के | | | |
| वनाश्रयिणः | – | वन का आश्रय लेने वाले पुरुष | | | |
| कुन्ताग्र | – | भालों के अग्रभाग से | भिन्नगज | – | विदारे गये हाथियों के |
| शोणित | – | खूनरूपी | वारिवाह | – | जल के प्रवाह में |
| वेगावतार | – | शीघ्रता से उतरने और | तरणातुर | – | तैरने के लिये आतुर |
| योधभीमे | – | योद्धाओं के द्वारा भयंकर | युद्धे | – | युद्ध में |
| दुर्जयजेयपक्षाः | – | दुर्जरू शत्रु पक्ष को | विजित | – | पराश्रित करके |
| जयम् | – | विजय | लभन्ते | – | पाते हैं। |

## भावार्थ :

हे प्रभुवर! आपके चरण कमलों का सहारा लेने वाला भक्त, भयंकर से भयंकर युद्ध में भी निश्चित ही विजय पाता है।

# सर्व शांति दायक

## भावानुवाद

बरछी भालों की नोकों से, गजदल कटे मरे।
खूनी नदियाँ बह निकली हैं, वर्णन कौन करे ।।
शत्रु पक्ष को जीत शीघ्र ही, विजय वरण कर ले।
जिनशासन की विजय पताका, नभ मण्डल फहरे ।।43।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी जिनशासनसेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रवविनाशिनी धर्मशान्तिकारिणी नमः शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

**आराधना :** ॐ ह्रीं श्रीं नमः।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं वनगजादिभयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

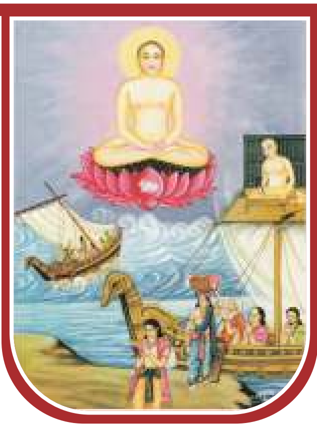

# नाम स्मरण से निर्विघ्न समुद्र यात्रा

अम्भोनिधौ क्षुभित - भीषण-नक्रचक्र-
पाठीन - पीठ - भयदोल्वण - वाडवाग्नौ।
रंगत्तरंग - शिखर - स्थित - यान - पात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।।44।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| क्षुभित | - क्षोभ को प्राप्त हुये | भीषण | - भयंकर |
| नक्र-चक्र | - मगर के समूह और | पाठीन पीठ | - मच्छों की पीठ की टक्कर से |
| भयदोल्वण | - भय पैदा करने वाले एवं विकराल | | |
| वाडवाग्नौ | - वडवानल से युक्त | अम्भोनिधौ | - समुद्र में |
| रंगत्तरंग | - चंचल लहरों के | शिखरस्थित | - अग्रभाग पर स्थित है |
| यानपात्राः | - जहाज जिनका ऐसे मनुष्यभवतः | स्मरणात् | - आपके स्मरण से |
| त्रासं विहाय | - डर छोड़कर | व्रजन्ति | - यात्रा करते हैं। |

## भावार्थ :

हे भगवन्! आपके स्मरण मात्र से भक्तजन तूफान के समय भी भयावह समुद्र में निर्भयता पूर्वक यात्रा करते हैं।

# सर्वापत्ति विनाशक

## भावानुवाद

जिस समुद्र में उछल रहे हों, मगरमच्छ भारी।
पानी में ही आग लगी हो, घोर विपद कारी ।।
तूफानी बेगों से नौका, डगमग डग डोले ।
नाम सुमरते भक्त आपका, शीघ्र पार हो ले ।।44।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो रावणाय विभीषणाय कुंभकरणाय लंकाधिपतये महाबलपराक्रमाय मनश्चिन्तितं कुरु कुरु स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं संसाराब्धि तारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

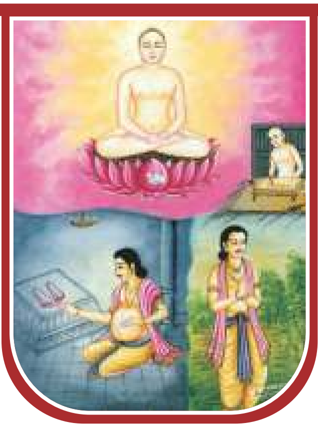

# व्याधि विनाशक चरण रज

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भारभुग्ना:
शोच्यां दशामुपगताश्च्युत-जीविताशा:।
त्वत्पादपंकज-रजोऽमृत-दिग्धदेहा
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपा:।।45।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| उद्भूत | - उत्पन्न हुये | भीषण | - भयंकर |
| जलोदर | - जलोदर रोग के | भारभुग्ना: | - भार से झुके हुये |
| शोच्यां दशाम् | - शोचनीय दशा को | उपगता: | - प्राप्त और |
| च्युतजीविताशा: | - छोड़ दी है जीवन की आशा जिसने ऐसे | | |
| मर्त्या: | - मनुष्य | त्वत्पादपंकज | - आपके चरण-कमलों की |
| रजोऽमृत | - धूलिरूप अमृत से | दिग्धदेहा: | - देह को लिप्त करने वाले |
| मकरध्वज | - कामदेव के | तुल्यरूपा: | - समान रूप वाले |
| भवन्ति | - हो जाते हैं। | | |

## भावार्थ :

हे नाथ! आपके चरण-कमल की धूलि को लगाने से महा भयंकर जलोदर आदि रोग भी दूर हो जाते हैं तथा शरीर कामदेव के समान सुन्दर दिखाई देने लगता है।

# जलोदरादि विनाशक

**भावानुवाद**

जिसे भयंकर हुआ जलोदर, रोग भार भारी।
जीने की आशा छोड़ी हो, यम घर तैयारी ।।
ऐसे नर भी तेरी पद रज, अंग लगाते हैं ।
तत्क्षण कामदेव या सुन्दर, तन पा जाते हैं ।।45।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो भगवती क्षुद्रोपद्रव शांतिकारिणी रोगकष्ट–ज्वरोपशमनं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

**आराधना :** ॐ ह्रीं भगवते भय भीषण हराय नमः।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं दाहतापजलोदराष्टदशकुष्टसन्निपातादिरोगहराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

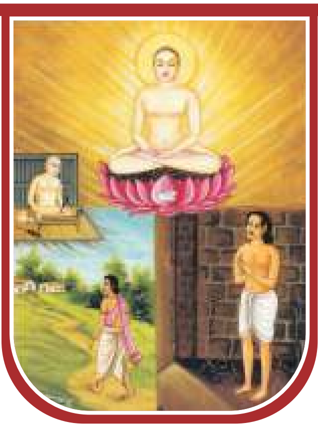

# नाम जप से बन्धन मुक्ति

आपाद–कण्ठमुरु–शृंखल–वेष्टितांगा
गाढं वृहन्निगड–कोटि–निघृष्टजंघाः।
त्वन्नाम–मन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति।।46।।

## अन्वयार्थ :

आपादकण्ठम् – पैरों से लेकर कण्ठपर्यन्त
उरुश्रंखल – बड़ी–बड़ी सांकलों से
वेष्टितांग – वेष्टित शरीर वाले
गाढम् – अत्यंत कसकर बांधी गई
वृहन्निगडकोटि – बड़ी–बड़ी सांकलों से
निघृष्टजंघः – घिस गई हैं जाघे जिनकी ऐसे
मनुजाः – मनुष्य
अनिशम् – निरन्तर
त्वन्नाममन्त्रम् – आपके नामरूपी मन्त्र को
स्मरन्तः – स्मरण करते हुये
सद्यः – शीघ्र ही
स्वयं – अपने आप
विगतबन्धभयाः – बन्धन–भय से रहित
भवन्ति – हो जाते हैं।

## भावार्थ :

हे भगवन्! जो भक्तजन निरन्तर आपके नाम का जाप करते हैं उनके बेड़ी आदि सारे बन्धन अपने आप टूट जाते हैं।

# बंधन विमोचक

## भावानुवाद

अरे लोह की जंजीरों से, जिसका तन जकड़ा।
जंघायें भी छिलती जायें, ज्यों–ज्यों तन रगड़ा।।
ऐसे बन्दी कारागृह में, बन्धन दुख पावें ।
नाम मन्त्र का जाप सुमरते, बाहर आ जावें ।।46।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो ह्रां ह्रीं श्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ठः ठः जः जः क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षयः स्वाहा।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं नानाविधकठिनबंधन दूरकरणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# सर्व-भय-निवारक जिन-स्तवन

मत्तद्विपेन्द्र – मृगराज – दवानलाहि
संग्राम–वारिधि–महोदर–बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते।।47।।

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| य मतिमान् | – जो बुद्धिमान पुरुष | तावकम् | – आपके |
| इमम् स्तवम् | – इस स्तोत्र को | अधीते | – पढ़ता है |
| तस्य | – उसका | मत्तद्विपेन्द्र | – मत हाथी |
| मृगराज | – सिंह | दवानल | – वनाग्नि |
| अहि | – सर्प | संग्राम | – युद्ध |
| वारिधि | – समुद्र | महोदर | – जलोदर और |
| बन्धनोत्थम् | – बन्धन से उत्पन्न हुआ | भयम् | – भय |
| भिया इव | – डर कर ही मानो | आशु नाशम् | – शीघ्र विनाश को |
| उपयाति | – प्राप्त हो जाता है। | | |

## भावार्थ :

हे प्रभु! जो बुद्धिमान पुरुष आपके इस स्तोत्र को भक्तिपूर्वक पढ़ता हैं। उसका मदोन्मत्त हाथी, सिंह, दावानल, सर्प, युद्ध, समुद्र, जलोदर रोग और काराग्रह आदि से उत्पन्न हुआ भय ही मानो भयभीत होकर भाग जाता है।

# अस्त्र शस्त्रादि निरोधक

## भावानुवाद

गज भय सिंह भय दावानल भय, अहिभय रणभय हो।
या समुद्रभय आधि व्याधि भय, या बन्धन भय हो ।।
पाठ करें यदि भक्तामर का, नर विवेकशाली।
उनके सारे भय भग जावें, बनें पुण्यशाली ।।47।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व सिध्दायद्णाणं वड्ढमाणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः य क्ष श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

**आराधना :** ॐ ह्रीं नमो भगवते उन्मत्त भयहराय नमः।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं बहुविधविघ्नविनाशनाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

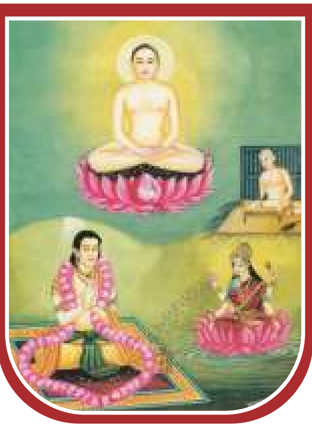

# स्तुति का फल

**स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां**
**भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम्।**
**धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं**
**तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः।।48।।**

## अन्वयार्थ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| जिनेन्द्र! | – हे जिनेन्द्र! | इह | – इस लोक में |
| यः जनः | – जो मनुष्य | मया | – मेरे द्वारा |
| भक्त्या | – भक्तिपूर्वक | गुणैः | – गुणों से |
| निबद्धाम् | – रची गई | रुचिरवर्ण | – सुन्दर वर्ण रूपी |
| विचित्रपुष्पाम् | – विविध प्रकार के पुष्पों वाली | तव | – आपकी |
| स्तोत्रस्रजम् | – स्तुति रूप माला को | अजस्रम् | – हमेशा |
| कण्ठगताम् धत्ते | – कण्ठ में धारण करता है | तं–मानतुंगम् | – उस सम्मान से उन्नत पुरुष को |
| अवशा लक्ष्मीः | – स्वतंत्र स्वर्ग मोक्षादि की विभूति | | |
| समुपैति | – प्राप्त होती है। | | |

## भावार्थ :

हे जिनेन्द्र! मेरे (आचार्य मानतुंग) द्वारा रची गई इस स्तुति रूपी माला को जो भक्तजन कण्ठ में धारण कर निरन्तर पाठ करते हैं। वह जगत के उच्च सम्मान को पाकर स्वर्ग और मोक्ष की लक्ष्मी को पाते हैं।

# मोक्ष लक्ष्मी प्रदायक

## भावानुवाद

हे जिनवर! तव गुण से गूँथी, भक्तामर माला।
नाना विध के पुष्प मनोहर, गुण धागा डाला ।।
भक्त आपका जो भी इसको, सदा कण्ठ धारे।
'मानतुंग श्री' उनको वरती, हुई विवश प्यारे ।।48।।

**ऋद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसाहूणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

**जाप्य मंत्र :** ॐ णमो भगवदो महदिमहावीर वड्ढमाणं बुद्धिरिसीणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

**आराधना :** ॐ ह्रीं लक्ष्मी प्राप्त्यै नमः।

**दीप मंत्र :** ॐ ह्रीं सकलकार्यसाधनसमर्थाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

# ऋद्धि मंत्र

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि–जिणाणं
3. णमो परमोहि–जिणाणं
4. णमो सव्वोहि–जिणाणं
5. णमो अणंतोहि–जिणाणं
6. णमो कोट्ठ–बुद्धीणं
7. णमो बीज–बुद्धीणं
8. णमो पदाणु–सारीणं
9. णमो संभिण्ण–सोदारणं
10. णमो सयं–बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय–बुद्धाणं
12. णमो बोहिय–बुद्धाणं
13. णमो उजु–मदीणं
14. णमो विउल–मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस–पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग–महा–णिमित्त–कुसलाणं
18. णमो विउव्वइडिढ–पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण–समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी–विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग–तवाणं
26. णमो दित्त–तवाणं
27. णमो तत्त–तवाणं
28. णमो महा–तवाणं
29. णमो घोर–तवाणं
30. णमो घोर गुणाणं
31. णमो घोर–परक्कमाणं
32. णमो घोर–गुण–बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि–पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि–पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि–पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि–पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि–पत्ताणं
38. णमो मण–बलीणं
39. णमो वचि–बलीणं
40. णमो काय–बलीणं
41. णमो खीर–सवीणं
42. णमो सप्पि–सवीणं
43. णमो महुर–सवीणं
44. णमो अमिय सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो भयवदो महदि–महावीर–वड्ढमाण बुद्ध–रिसीणो चेदि।

# गणधर-वलय

जिनान् जिताराति-गणान् गरिष्ठान्,
देशावधीन् सर्व-परावधींश्च।
सत्-कोष्ठ-बीजादि-पदानुसारीन्,
स्तुवे गणेशानपि तद्-गुणाप्त्यै।।1।।

संभिन्न-श्रोतान्वित-सन्-मुनीन्द्रान्,
प्रत्येक-सम्बोधित-बुद्ध-धर्मान्।
स्वयं-प्रबुद्धांश्च विमुक्ति-मार्गान्,
स्तुवे गणेशानपि तद्-गुणाप्त्यै ।।2।।

द्विधा मनःपर्यय-चित्-प्रयुक्तान्,
द्विपञ्च-सप्तद्वय-पूर्व-सक्तान्।
अष्टांग-नैमित्तिक शास्त्र-दक्षान्,
स्तुवे गणेशानपि तद्-गुणाप्त्यै ।।3।।

विकुर्वणाख्यर्द्धि-महा-प्रभावान्,
विद्याधरांश्चारण-ऋद्धि-प्राप्तान्।
प्रज्ञाश्रितान् नित्य-ख-गामिनश्च,
स्तुवे गणेशानपि तद्-गुणाप्त्यै ।।4।।

आशी र्विषान् दृष्टि-विषान् मुनीन्द्रा-,
नुग्राति-दीप्तोत्तम-तप्त तप्तान्।
महातिघोर-प्रतपः-प्रसक्तान्,
स्तुवे गणेशानपि तद्-गुणाप्त्यै ।।5।।

वन्द्यान् सुरै-र्घोर-गुणांश्च लोके
पूज्यान् बुधै-र्घोर-पराक्रमांश्च।
घोरादि संसद्-गुण ब्रह्म युक्तान्,
स्तुवे गणेशानपि तद्-गुणाप्त्यै ।।6।।

आमर्द्धि–खेलर्द्धि–प्रजल्ल–विटप्र
सर्वर्द्धि–प्राप्तांश्च व्यथादि–हंत्रून।
मनो–वचः काय–बलोपयुक्तान्
स्तुवे गणेशानपि तद्–गुणाप्त्यै ।।7।।

सत् क्षीर–सर्पि–र्मधुरामृतर्द्धीन्,
यतीन् वराक्षीण महानसांश्च।
प्रवर्धमानांस्त्रिजगत्–प्रपूज्यान्,
स्तुवे गणेशानपि तद्–गुणाप्त्यै ।।8।।

सिद्धालयान् श्रीमहतोऽतिवीरान्,
श्रीवर्धमानर्द्धि विबुद्धि–दक्षान्।
सर्वान् मुनीन् मुक्तिवरा–नृषीन्द्रान्,
स्तुवे गणेशानपि तद्–गुणाप्त्यै ।।9।।

नृ–सुर–खचर–सेव्या विश्व–श्रेष्ठर्द्धि–भूषा,
विविध–गुण–समुद्रा मार मातंग–सिंहाः।
भव–जल–निधि–पोता वन्दिता में दिशन्तु,
मुनिगणसकलाः श्रीसिद्धिदाः सदृषीन्द्रा।।10।।

नित्यं यो गणभृन्मन्त्र, विशुद्धसन् जपत्यमुम्।
आस्त्रवस्तस्य पुण्यानां, निर्जरा पापकर्मणाम्।।
नश्यादुपद्रव कश्चिद्, व्याधिभूत विषादिभिः
सदसत् वीक्षणे स्वप्ने, समाधिश्च भवेन्मृतो।।

❒❒

# भक्तामर महिमा

श्री भक्तामर का पाठ, करो नित प्रात, भक्ति मन लाई।
सब संकट जाए नशाई ।।
जो ज्ञान-मान-मतवारे थे, मुनि मानतुंग से हारे थे।
उन चतुराई से नृपति लिया, बहकाई ।। सब संकट...।।1।।
मुनिजी को नृपति बुलाया था, सैनिक जा हुक्म सुनाया था।
मुनि वीतराग को आज्ञा नहीं सुहाई ।। सब संकट...।।2।।
उपसर्ग घोर तब आया था, बलपूर्वक पकड़ मँगाया था।
हथकड़ी बेड़ियों से तन दिया बधाई ।। सब संकट...।।3।।
मुनि काराग्रह भिजवाए थे, अड़तालिस ताले लगाए थे।
क्रोधित नृप बाहर पहरा दिया बिठाई ।। सब संकट...।।4।।
मुनि शांतभाव अपनाया था, श्री आदिनाथ को ध्याया था।
हो ध्यान-मग्न भक्तामर दिया बनाई ।। सब संकट...।।5।।
सब बंधन टूट गए मुनि के, ताले सब स्वयं खुले उनके।
काराग्रह से आ बाहर दिए दिखाई ।। सब संकट...।।6।।
राजा नत होकर आया था, अपराध क्षमा करवाया था।
मुनि के चरणों में अनुपम भक्ति दिखाई ।। सब संकट...।।7।।
जो पाठ भक्ति से करता है, नित ऋषभ-चरण चित धरता है।
जो ऋद्धि-मंत्र का विधिवत् जाप कराई ।। सब संकट...।।8।।
भय विघ्न उपद्रव टलते हैं विपदा के दिवस बदलते हैं।
सब मन वांछित हों पूर्ण, शांति छा जाई ।। सब संकट...।।9।।
जो वीतराग आराधन है, आतम उन्नति का साधन है।
उससे प्राणी का भव बंधन कट जाई ।। सब संकट...।।10।।
'कौशल' सुभक्ति को पहिचानो, संसार-दृष्टि बंधन जानो।
लो भक्तामर से आत्म-ज्योति प्रकटाई ।। सब संकट...।।11।।

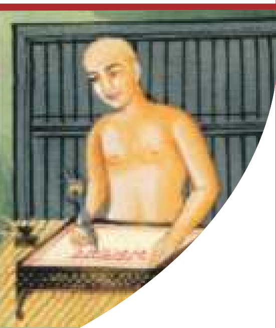

# भक्तामर आरती

– द्यानतराय कवि

इह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परम पद भज सुख लीजे ।।
इह विधि मंगल ......
पहली आरती श्री जिनराजा, भवदधि पार उतार जिहाजा ।।
इह विधि मंगल ......
दूसरी आरती सिद्धन केरी, सुमिरन करत मिटे भव फेरी।।
इह विधि मंगल ......
तीसरी आरती सूर मुनिन्दा, जनम–मरण दुःख दूर करिन्दा।।
इह विधि मंगल ......
चौथी आरती श्री उवझाया, दर्शन देखत पाप पलाया।।
इह विधि मंगल ......
पाँचवी आरती साधु तिहारी, कुमति विनाशन शिव अधिकारी।।
इह विधि मंगल ......
छट्ठी ग्यारह प्रतिमाधारी, श्रावक बन्दौं आनन्दकारी।।
इह विधि मंगल ......
सातवीं आरती श्री जिनवाणी, ''द्यानत'' स्वर्ग मोक्ष सुखदानी।।
इह विधि मंगल ......
आरती करुँ सम्मेदशिखर की, सिद्धक्षेत्र गिरनार शिखर की।
आरती करुँ कैलासगिरि की, चम्पापुर, पावापुरजी की ।।
इह विधि मंगल ......
जो कोई आरती करे करावे, सो नर–नार अमर पद पावे।
संध्या करके आरती कीजे, अपनो जन्म सफल कर लीजे ।।
इह विधि मंगल ......

# स्मरण बिन्दु

# सारस्वत श्रमण नय चक्रवर्ती श्रमणाचार्य
# 108 श्री विभवसागर जी महाराज

| | |
|---|---|
| पूर्व नाम | पण्डित अशोक कुमार जी जैन शास्त्री |
| जन्मस्थान | किसनपुरा (सागर) म.प्र. |
| जन्मतिथि | कार्तिक कृष्ण अमावस्या 2033<br>तदनुकूल 23 अक्टूबर 1976 |
| पिता | श्रावकरत्न श्री लखमीचन्द्र जैन |
| माता | श्राविकारत्न श्रीमती गुलाबबाई जैन |
| शिक्षा | संस्कृत शास्त्री प्रथम वर्ष (इण्टर) |
| धार्मिक शिक्षा | धर्मशास्त्री द्वितीय वर्ष |
| शिक्षण संस्थान | श्री गणेशवर्णी दिगम्बर जैन महाविद्यालय मोराजी सागर म.प्र. |
| वैराग्य | 9 अक्टूबर 1994 को ब्र. व्रत लिया |
| क्षु. दीक्षा | 28 जनवरी 1995 मंगलगिरि सागर म.प्र. |
| ऐलक दीक्षा | 23 फरवरी 1996 देवेन्द्रनगर (पन्ना) म.प्र. |
| मुनि दीक्षा | 14 दिसंबर 1998 अतिशय क्षेत्र बरासौ भिण्ड म.प्र. |
| दीक्षा गुरु | गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज |
| आचार्य पद | 31 मार्च 2007 औरंगाबाद (महाराष्ट्र) |
| विशेष | जैन आगम रुपी मानसरोवर के राजहंस की तरह झलक देने वाले प्रज्ञाश्रमण की प्रवचन शैली जन-जन द्वारा हृदयग्राह्य है। |
| कृतियाँ | अभी तक आचार्य श्री द्वारा 62 कृतियों की सृजना की गई है। |
| अलंकरण | '' सारस्वत-श्रमण '', '' सारस्वत-कवि '' एवं '' शास्त्र-कवि '' |